हिंदी 'अ'

प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र

उत्तरमाला

6

सी.बी.एस.ई., कक्षा X

खंड 'क' अपठित बोध 10

1. (क) जब मानव ने स्वयं को जीवन देने वाले प्रकृति प्रदत्त उपहारों जैसे जल, जमीन, जंगल, औषधि, अन्य अनेक पदार्थों का शोषण जोंक की भाँति करने का प्रयत्न किया, तब चेतावनी के रूप में प्रकृति के अनेक रंग देखने को मिलते हैं। [2]

(ख) प्रकृति सहनशीलता, धैर्य, अनुशासन की प्रतिमूर्ति के रूप में हमारा पथ प्रदर्शन करती है, हमारे भीतर संघर्ष का भाव जगाकर समस्या के हल के लिए उत्प्रेरक का काम करती है। जल, जमीन, जंगल आदि को उपहार के रूप में प्रदान करती है। [2]

(ग) प्रस्तुत गद्यांश के माध्यम से लेखक ने यह संदेश दिया है कि हम अपने पुराने रवैये को त्यागकर अपने आचरण में यथोचित सुधार करें और प्रकृति की सीमा का अतिक्रमण न करें अन्यथा हमें गंभीर प्राकृतिक आपदाओं का सामना करना पड़ेगा। [2]

(घ) वर्तमान समय में मनुष्य की फितरत बन गई है जल के अविरल प्रवाह को बाँधने की। स्वार्थ में अंधे हो चुके मनुष्य ने वनों को बेरहमी से काटने और उजाड़ फेंकने में कभी संकोच नहीं किया, नदियों की छाती को छलनी कर अवैध खनन के रोज नए रिकॉर्ड बनाना इन्सान का स्वभाव बन चुका है। आज भी वह पृथ्वी के गर्भ से भू-जल, खनिज तेल आदि को अंधाधुध तथा बेलगाम तरीके से निकाल रहा है। परिणामस्वरूप यदि हमें प्राकृतिक आपदा या तबाही का सामना करना पड़े तो आश्चर्य की बात नहीं है। [2]

(घ) जब प्रकृति का तांडव देखने को मिलता है तब प्रकृति की ताकत के सामने मानव बौना दिखाई पड़ता है। [1]

(ङ) प्रकृति के अनुशासन तोड़ने का परिणाम भारी तबाही के मंजर के रूप में सामने आता है। [1]

खंड 'ख' व्यावहारिक व्याकरण 16

2. (क) मुझे अपनी पत्नी व पुत्र की मृत्यु याद आ रही है और फ़ादर के शब्दों से झरती शांति भी। [1]

(ख) रात होते ही आकाश में तारों के असंख्य दीप जल उठे। [1]

(ग) संज्ञा उपवाक्य [1]

(घ) जो बात पान वाले के लिए मजेदार थी वही बात हालदार साहब के लिए चकित कर देने वाली थी। [1]

3. (क) पान हालदार साहब द्वारा खाया गया। [1]

(ख) दादा जी से प्रतिदिन पार्क मे टहला जाता है। [1]

(ग) गांधी जी ने विश्व को सत्य और अहिंसा का संदेश दिया। [1]

(घ) पान आगे खाया जाएगा। [1]

4. **(क)** बालगोबिन भगत की-व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिग, एकवचन, संबंध कारक। [1]

(ख) उस-सार्वनामिक विशेषण, 'दिन'-विशेष्य, एकवचन, पुल्लिंग। [1]

(ग) जब-अव्यय, कालवाचक क्रियाविशेषण, 'मरा' क्रिया का विशेषण। [1]

(घ) उनका - सार्वनामिक विशेषण, एकवचन, पुल्लिंग, विशष्य - बेटा [1]

(ङ) मरा-अकर्मक क्रिया, भूतकाल, कर्तृवाच्य, पुल्लिग, एकवचन, 'मर' धातु [1]

(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016)

5. **(क)** वत्सल रस [1]

(ख) रति [1]

(ग) करुण रस [1]

(घ) उपयुक्त उदाहरण पर पूरे अंक दिए जाएँ। **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016)** [1]

व्याख्यात्मक हल:

उदाहरण - एक मित्र बोले 'लाला तुम किस चक्की का खाते हो?
इतने महँगे राशन में भी, तुम तोंद बढ़ाए जाते हो।

खंड 'ग' पाठ्यपुस्तक तथा पूरक पाठ्यपुस्तक 34

6. **(क)** • शहनाई बजाने में प्रयुक्त 'रीड' डुमराँव में सोन नदी के किनारे पाई जाने वाली 'नरकट घास' से बनाई जाती है।
• शहनाई वादक उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ का जन्म स्थान डुमराँव ही है। [1 + 1 = 2]
(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016)

व्याख्यात्मक हल-शहनाई और डुमराँव एक-दूसरे के लिए उपयोगी हैं। डुमराँव हमारे शहनाई सम्राट बिस्मिल्ला खाँ की जन्मभूमि है। इसके अतिरिक्त डुमराँव में सोन नदी के किनारे नरकट नाम की घास मिलती है। जिससे शहनाई बजाने में प्रयुक्त होने वाली रीड बनती है।

(ख) • रीड नरकट नाम की घास से बनाई जाती है।
• रीड अंदर से पोली होती है। उसके सहारे शहनाई को फूँका जाता है। [1 + 1 = 2]
(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016)

व्याख्यात्मक हल-रीड सोन नदी के किनारे पर पाई जाने वाली नरकट घास से तैयार की जाती है, जिससे शहनाई बजाने में प्रयुक्त होने वाली रीड बनती है। वह अंदर से पोली होती है। फूँककर बजाए जाने वाले वाद्य जिनमें रीड का प्रयोग होता है 'नय' कहे जाते हैं। अत: इस वाद्य को शाहेनय अर्थात 'वाद्यों का शाह' कहा जाता है। इसी से 'शहनाई' शब्द की भी उत्पति हुई।

(ग) उस्ताद पैगंबरबख्श खाँ और मिट्ठन। **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016)**

व्याख्यात्मक हल-अमीरुद्दीन की माता मिट्ठन बाई तथा पिता उस्ताद पैगंबर बक्श खाँ थे। [2]

7. **(क)** लेखक ने फ़ादर कामिल बुल्के की याद को यज्ञ की पवित्र अग्नि इसलिए कहा कि फ़ादर का व्यक्तित्व सबसे अधिक छायादार फल-फूल गंध से भरा और सबसे अलग, सबका होकर सबसे ऊँचाई पर, मानवीय करूणा की दिव्य चमक में लहलहाता खड़ा हुआ था। [2]

(ख) मन्नू भंडारी का अपने पिता से वैचारिक मतभेद था। वैचारिक टकराव का सिलसिला उनके होश संभालने के बाद ही शुरू हो गया था - कहीं कुंठाओं के रूप में, कहीं प्रतिक्रिया के रूप में तो कहीं प्रतिच्छाया के रूप में। [2]

(ग) 'नेता जी का चश्मा' पाठ में बच्चों द्वारा मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा लगाना प्रंदर्शित करता है कि इस देश के निर्माण में अपने-अपने तरीके से बड़ों के साथ-साथ छोटा देश-भक्त भी योगदान देता है, उन छोटे देश-भक्तों में बच्चे भी शामिल हैं। **[2]**

(घ) बालगोबिन भगत अपने सुस्त और बोदे से बेटे के साथ अधिक प्यार, निगरानी व मुहब्बत का व्यवहार करते थे क्योंकि उनका मानना था कि जो लोग शारीरिक रूप से अक्षम व मानसिक रूप से शिथिल होते हैं उनका अधिक ध्यान रखा जाना चाहिए। **[2]**

(ङ) लेखक ने भीड़ से बचकर एकांत में नई कहानी के संबंध में सोचने और खिड़की से प्राकृतिक दृश्य देखने का आनंद लेने के लिए सेकंड क्लास का टिकट लिया। **[2]**

8. **(क)** शारीरिक रूप से सुखी होने पर भी व्यक्ति का मन वर्तमान की कठिनाइयों में अतीत की सुखद स्मृतियों को याद कर दु:खी होता है। **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016) [2]**

व्याख्यात्मक हल-कवि का मानना है कि मनुष्य शारीरिक रूप से स्वस्थ होता है, उसे भौतिक सुखों का अभाव नहीं होता है। लेकिन जीवन में अनगिनत चिंताएँ होती हैं। जिनसे मुक्त होना असंभव है। मन अतीत के सुखद क्षणों को याद करके दु:खी है क्योंकि वे अब उसके साथ नहीं हैं इसलिए हमारे मन के दु:खों का अंत संभव नहीं हो पाता है। न ही शारीरिक रूप से सुखी होने पर भी व्यक्ति का मन वर्तमान की कठिनाइयों में अतीत की सुखद स्मृतियों को याद कर दु:खी होता है।

(ख) इच्छित समय पर अपेक्षित उपलब्धि न होकर यदि बाद में हो तो भी वह उपलब्धि आनंददायक होती है। **[2]**
(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016)

व्याख्यात्मक हल-उक्त पंक्तियों में कवि कहता है कि शरद ऋतु की रात में यदि चाँद न निकले और वसंत ऋतु आने पर फूल न खिले तो बाद में इन सब का क्या लाभ? फूलों की मादक सुगंध तो बसंत में ही भली प्रतीत होती है। समय निकल जाने पर यदि थोड़ा बहुत सुख मिल भी जाए, तो वह व्यर्थ ही है।

(ग) अतीत की सुखद स्मृतियाँ हमारे वर्तमान के दु:ख को दोगुना कर देती है। **[2]**
(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016)

व्याख्यात्मक हल-कवि छाया को छूने के लिए इसलिए मना कर रहा है क्योंकि ये अतीत की सुखद स्मृतियाँ हमें कल्पना लोक में विचरण कराती रहती हैं। इनसे मन का दु:ख दुगुना हो जाता है।

9. **(क)** ● मुनि विश्वामित्र को
● परशुराम के बड़बोलेपन और राम-लक्ष्मण को साधारण मानव मानने की नासमझी पर। **[1 + 1 = 2]**

(ख) ● परशुराम ने क्रोधित होकर कहा कि शिवधनुष तोड़ने वाला सहस्रबाहु के समान उनका घोर शत्रु है जिसे क्षमा नहीं किया जा सकता।
● जिसने शिवधनुष तोड़ा वह राज-समाज से अलग हो जाए अन्यथा वे सभी राजाओं का वध कर डालेंगे। **[1 + 1 = 2]**

(ग) ● बेटी माँ के सबसे निकट होती है।
● सुख-दु:ख की साथिन होती है।
● बेटी के जाने के बाद माँ का जीवन रिक्त हो जाएगा। **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016) [2]**

व्याख्यात्मक हल (ग) माँ के लिए अपनी बेटी को अंतिम पूँजी इसलिए कहा गया है क्योंकि उसके ससुराल जाने के बाद वह बिल्कुल खाली हो जाएगी। बेटी पर उसका सारा ध्यान केंद्रित रहता है। यह उसके जीवन की अंतिम पूँजी है। जब वह कन्यादान कर देती है तो उसके पास कुछ न बचेगा।

(घ) संगतकार मुख्य कलाकार का संबल बनते हैं, उसे भटकने से बचाते हैं, स्वयं प्रतिभावान होने पर भी उससे आगे बढ़ने का प्रयास नहीं करते। **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016) [2]**

व्याख्यात्मक हल-संगतकार मुख्य गायक की गरजदार आवाज में अपनी गूँज मिलाता है। वह भारी-भरकम आवाज को कोमलता प्रदान करता है। सदा मुख्य गायक के कष्टों का निवारक रहा है। संगतकार उसके पीछे लगातार गाता रहता है और उसके बुझते स्वर को संभाले रहता है। ऊँचा गाने की प्रतिभा होने पर भी वह मुख्य गायक के स्वर से अपना स्वर नीचा रखकर उसका सम्मान करता है जो संगतकार की मनुष्यता है।

(ङ) यथार्थ जीवन की वास्तविकता है, सत्य यहाँ वर्तमान के दु:खों को कठिन यथार्थ कहा गया है। इस स्थिति में मुँह मोड़ना सही नहीं है। इस यथार्थ को स्वीकार कर उसका सामना करके ही हम उज्जवल भविष्य की नींव रख सकते हैं। **[2]**

10. (क) विद्यार्थी अपनी समझ से उत्तर देंगे। **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2015) [3]**

व्याख्यात्मक हल-पर्वतीय स्थलों पर व्यावसायिक गतिविधियों का यहाँ के वातावरण व प्रकृति पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है। प्रकृति में असंतुलन बढ़ा है। पर्वतीय स्थलों पर घूमने के लिए आने वाले पर्यटक वहाँ पर अपने साथ ले जाए गए सामान, कूड़ा-करकट, बचा हुआ भोज्य पदार्थ वहीं छोड़कर चल देते हैं, जिसके कारण प्रदूषण फैलता है तथा प्राकृतिक सौंदर्य नष्ट हो जाता है। इसलिए इन सबकी रोकथाम के लिए जागरूकता अभियान चलाना चाहिए। विभिन्न प्रकार की गतिविधियों को नियंत्रित किया जाना चाहिए। पर्वतीय स्थलों को स्वच्छ बनाए रखने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। सरकार द्वारा कठोर कदम उठाए जाने चाहिए ताकि इनके प्राकृतिक सौंदर्य को बचाया जा सके।

(ख) जार्ज पंचम की लाट की नाक जब टूट गई थी तब मूर्तिकार ने उसे बदलकर सुंदर बनाने के लिए निम्नलिखित प्रयत्न किए- **[3]**

(i) मूर्तिकार ने जार्ज पंचम की मूर्ति की नाक के पत्थर की किस्म का पता लगाने के लिए प्रयास किया।

(ii) पत्थर की किस्म का ठीक से पता न चलने पर उसने हिंदुस्तान के प्रत्येक पहाड़ी प्रदेश और हर एक पहाड़ पर जाकर ऐसा ही पत्थर खोजने की कोशिश की।

(iii) मूर्तिकार भारतीय नेताओं की मूर्तियाँ देखने के लिए देश में चप्पे-चप्पे पर घूमा ताकि उनकी नाक को काटकर लाट पर लगाया जा सके।

(iv) उसने बिहार सेक्रेटेरिएट के सामने सन बयालीस में शहीद होने वाले बच्चों की मूर्तियों की नाकों को भी देखा।

(v) अंत में उसने जिंदा व्यक्ति की नाक काटकर जार्ज पंचम की लाट पर लगा दी। **[3]**

(ग) 'माता का अंचल' नामक पाठ में लेखक ने तत्कालीन समाज के पारिवारिक परिवेश का चित्रण बड़ी ही सजीवता व यथार्थता के साथ किया है। भोलानाथ के पिता सुबह-सवेरे उठकर भोलानाथ को नहलाधुलाकर पूजा पर बिठा लेते थे। जब बालक भोलानाथ भभूत का तिलक लगाने की जिद करता तो उसके ललाट पर अर्धचंद्राकार रेखाएँ बना देते थे। पिताजी उसे गोरस और भात सानकर बड़े प्यार से खिलाते थे। परिवार में माता अपने पुत्र को इस भाव से खिलाती थी कि मर्द बच्चों को खाना खिलाने का ढंग नहीं जानते। माँ के हाथ से ही खाने पर बच्चों का पेट भरता है वह भरा हुआ पेट होने पर भी अलग-अलग पक्षियों के नाम लेकर दही और चावल के बड़े-बड़े कौर मुँह मे डालकर कहती कि जल्दी खा नहीं तो उड़ जाएँगे और बच्चा उसे खा लेता है। माँ का बालक भोलानाथ को पकड़ कर तेल लगाना और उसका सुबकना, पिता जी का बच्चों के खेल के बीच आ जाना और बच्चों का शर्मा कर भाग जाना जैसे यथार्थ चित्रण को उक्त लेख में स्पष्ट किया है। **[3]**

खंड 'घ' लेखन **20**

11. (क) यदि मैं प्रधानाचार्य होता

प्रस्तावना-यदि मैं किसी विद्यालय का प्रधानाचार्य होता तो इस पद की प्रतिष्ठा को बनाए रखने के लिए मेरी भी वही स्थिति होती जो एक उपवन के माली की होती है अर्थात जिस भाँति उपवन का माली अपने उद्यान को हरा-भरा बनाए रखने के लिए ठीक समय पर बीज, पौधों में जल, हवा, खाद, धूप प्रदान कर

उस उद्यान की हरियाली अंकुरित करता है ठीक उसी भाँति यदि मैं प्रधानाचार्य होता तो अपने विद्यालय की प्रतिष्ठा को बनाए रखने के लिए विद्यालय रूपी परिवार का अच्छे संस्कारों से मार्ग प्रशस्त करता।

प्रधानाचार्य के कार्य-परिवार अथवा विद्यालय के सदस्यों का प्रेम, विश्वास पाना ही एक मुखिया या प्रधानाचार्य की सबसे बड़ी उपलब्धता होती है। इस पद की जिम्मेदारी सँभालने के बाद पग-पग पर परेशानियाँ खड़ी होती हैं। सही समय पर सही निर्णय लेकर जो गतिरोधों को दूर करता रहे वही एक कुशल मुखिया या प्रधानाचार्य होता है।

व्यवहार और चरित्र-व्यवहार और चरित्र दो ऐसे गुण हैं, जो व्यक्ति को हर देश और हर काल में विजय दिलाते हैं। वैसे तो हर व्यक्ति को व्यवहार-कुशल और चरित्रवान होना चाहिए, किंतु उच्च पदों पर आसीन व्यक्तियों का व्यक्तित्व तो विशिष्ट होना अति आवश्यक है। यदि मैं प्रधानाचार्य होता तो दूसरों को अनुशासन का उपदेश देने से पूर्व स्वयं को अनुशासित करता। यदि मैं ऐसा करता तो सभी अधीनस्थों में स्वत: ही यह गुण विकसित होता।

अनुशासनप्रियता-अनुशासन किसी भी विद्यालय का सबसे अधिक आवश्यक अंग है। अनुशासन के अभाव में विद्यालय का संचालन असंभव है। यदि मैं प्रधानाचार्य होता तो मैं विद्यालय में अनुशासन स्थापित करने की बहुमुखी योजना बनाता तथा इस कार्य में विद्यार्थियों एवं अपने सहयोगियों का सहयोग लेता।

कुशल निरीक्षण-यदि मैं प्रधानाचार्य होता तो विद्यालय में पाई जाने वाली बड़ी-से-बड़ी अथवा छोटी-से-छोटी त्रुटियों का सूक्ष्म निरीक्षण करता तथा उस तरह की त्रुटियों की पुनरावृत्ति नहीं होने देता।

योजनाबद्ध कार्यक्रम-विद्यालय की हर क्षेत्र में प्रगति और पठन-पाठन को सुचारू रूप से चलाने के लिए योजनाबद्ध कार्यक्रम की विशेष आवश्यकता होती है। यदि मैं प्रधानाचार्य होता तो सर्वप्रथम अध्यापन को सुचारू रूप से चलाने के लिए एक समय सारणी अवश्य बनाता जिसमें विद्यालय के खुलने से लेकर बंद होने तक का सारा कार्यक्रम अंकित रहता।

विज्ञान, साहित्य कला एवं खेलकूद की व्यवस्था-यदि मैं विद्यालय का प्रधानाचार्य होता तो सर्वप्रथम विज्ञान क्षेत्र की प्रगति के लिए रसायन, भौतिक, जीव विज्ञान, वनस्पति विज्ञान की शोध-प्रयोगशालाओं का निर्माण कराता। साहित्य एवं कला तथा खेल-कूद की आवश्यकता को ध्यान में रखकर विद्यालय में भव्य पुस्तकालय तथा कला प्रयोगशाला एवं खेल-कूद के लिए क्रीडास्थल की व्यवस्था अवश्य करता जिससे विद्यार्थियों को बौद्धिक एवं शारीरिक दोनों प्रकार की क्षमताओं के विकास के अवसर मिलें।

उपसंहार-विद्यालय सरस्वती का वह पावन मंदिर है जहाँ प्रतिवर्ष न जाने कितने छात्र रूपी साधक मत्था टेकने आते हैं। उनकी इस तपस्या, साधना में कोई व्यवधान न पड़े इसके लिए मैं सदैव सुरक्षा कवच की भाँति सामने रहता। **[10]**

(ख) बेरोज़गारी : समस्या और समाधान-

भूमिका-आज भारत के सामने अनेक समस्याएँ चट्टान बनकर प्रगति का रास्ता रोके खड़ी हैं। उनमें से एक प्रमुख है-बेरोज़गारी। महात्मा गांधी ने इसे 'समस्याओं की समस्या' कहा था।

अर्थ-बेरोज़गारी का अर्थ है-योग्यता के अनुसार काम का न होना। भारत में मुख्यतया तीन प्रकार के बेरोज़गार हैं। एक जिनके पास आजीविका का कोई साधन नहीं है। वे पूरी तरह खाली हैं। दूसरे, जिनके पास कुछ समय काम होता है, परंतु मौसम या काम का समय समाप्त होते ही वे बेकार हो जाते हैं। ये आंशिक बेरोज़गार कहलाते हैं। तीसरे वे, जिन्हें योग्यता के अनुसार काम नहीं मिला।

कारण- बेरोज़गारी का सबसे बड़ा कारण है-जनसंख्या-विस्फोट। इस देश में रोज़गार देने की जितनी योजनाएँ बनती हैं वे सब अत्यधिक जनसंख्या बढ़ने के कारण बेकार हो जाती हैं। एक अनार सौ बीमार वाली कहावत यहाँ पूरी तरह चरितार्थ होती है। बेरोज़गारी का दूसरा कारण है-युवकों में बाबूगिरी की होड़। नवयुवक हाथ का काम करने में अपना अपमान समझते हैं, विशेषकर पढ़े-लिखे युवक दफ्तरी जिंदगी पसंद करते हैं। इस कारण वे रोज़गार-कार्यालय की धूल फाँकते रहते हैं।

बेकारी का तीसरा बड़ा कारण है-दूषित शिक्षा-प्रणाली। हमारी शिक्षा-प्रणाली नित नए बेरोज़गार पैदा करती जा रही है। व्यवसायिक प्रशिक्षण का हमारी शिक्षा में अभाव है। चौथा कारण है-गलत योजनाएँ। सरकार को चाहिए कि वह लघु उद्योगों को प्रोत्साहन दे। मशीनीकरण को उस सीमा तक बढ़ाया जाना चाहिए जिससे कि रोज़गार के अवसर कम न हों। इसीलिए गांधीजी ने मशीनों का विरोध किया था, क्योंकि एक मशीन कई कारीगरों के हाथों को बेकार बना डालती है।

दुष्परिणाम-बेरोज़गारी के दुष्परिणाम अतीव भयंकर हैं। खाली दिमाग शैतान का घर। बेरोज़गार युवक कुछ भी गलत-शलत करने पर उतारू हो जाते हैं। वहीं शांति को भंग करने में सबसे आगे होते हैं। शिक्षा का माहौल भी वही बिगाड़ते हैं जिन्हें अपना भविष्य अंधकारमय लगता है।

समाधान- बेकारी का समाधान तभी हो सकता है, जब जनसंख्या पर रोक लगाई जाए। युवक हाथ का काम करें। सरकार लघु उद्योगों को प्रोत्साहन दे। शिक्षा व्यवसाय से जुड़े तथा रोज़गार के अधिकाधिक अवसर जुटाए जाएँ। **[10]**

(ग) पुस्तकालय से लाभ

प्रस्तावना-पुस्तकालय दो शब्दों से बनता है पुस्तक + आलय, अर्थात पुस्तकों का घर। पुस्तकालय ही ज्ञान की शक्ति है। शक्ति के इस स्रोत 'ज्ञान' को अनुभव से या फिर पुस्तकों, पत्रिकाओं आदि के द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है।

पुस्तकालय का महत्व-जब तक लिपि और लेखन की सामग्री का विकास नहीं हुआ था तब तक तो स्मरण शक्ति और वाक शक्ति द्वारा ज्ञान पीढ़ी-दर-पीढ़ी एक से दूसरे तक पहुँचता रहा, फिर संस्कृति और सभ्यता के विकास के साथ सभी साधन जुड़ते गए और आज सी.डी., पेनड्राइव, इंटरनेट कंप्यूटर आदि अनेक आधुनिक आविष्कार जानकारी और उनके संग्रह के साधन उपलब्ध हैं फिर भी पुस्तकालयों और वाचनालयों का महत्व अपना अलग ही है।

प्रकार-पुस्तकालय व्यक्तिगत, सार्वजनिक, सरकारी, विभागीय एवं शिक्षण संस्थाओं यथा विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालयों के होते है जिनमें रुचि और आवश्यकतानुसार विभिन्न विषयों की पुस्तकें पढ़ने को मिल सकती हैं, पटना का खुदीराम पुस्तकालय, हैदराबाद और दिल्ली का पुस्तकालय सबसे अधिक प्रसिद्ध हैं जिनमें सभी विषयों की लाखों पुस्तकें, हस्तलिखित शोध-पत्र, आदि हैं।

लाभ-'भिन्न रुचिर्हि लोकः' अर्थात संसार के मनुष्यों की अपनी-अपनी रुचि होती है। कोई ज्योतिष, विज्ञान, धर्मशास्त्र, अभियांत्रिक चिकित्सा संबंधी विषयों में रुचि रखता है तो कोई साहित्य, ललित कलाओं, इतिहास, भूगोल आदि के प्रेमी होते हैं। कोई भी व्यक्ति प्रत्येक दिन लाखों करोड़ों पुस्तकों को जो छपती रहती हैं क्रय करके नहीं पढ़ सकता है। अतः ये पुस्कालय उन लोगों की जिज्ञासाओं को शांत करते हैं। पुस्तकालय में मनोरंजन, खेलकूद आदि की अनेक पुस्तकें भी होती हैं जिनसे स्वतः ज्ञानवर्धक मनोरंजन प्राप्त होता है। दुर्लभ पुस्तकें पुस्तकालयों में ही प्राप्त हो सकती हैं, जिनकी सहायता से ज्ञानवर्धन, शोध उपाधि प्राप्त होती है।

उपसंहार- पुस्तकें मानव समाज की गुरु व सच्ची मित्र हैं। मुझे तो हर नई पुस्तक में नया मित्र दिखता है।

'मैं जो नया ग्रंथ विलोकता हूँ, भाता मुझे सो नव-मित्र सा है।
देखूँ उसे मैं नित बार-बार, मानो मिला मित्र मुझे पुराना॥

वास्तव में पुस्तकों का सही चयन, उनकी समुचित देखभाल व रख-रखाव गाँव-गाँव में पुस्तकालय खोलना और उन्हें आर्थिक संकटों से बचाना, सही ईमानदार व्यक्तियों को पुस्तकालय चलाने का भार सौंपना, उसके नियम कानूनों का पूर्णतः पालन, दबाव व पक्षपात से रहित पुस्तक संग्रह होना जहाँ अत्यंत आवश्यक है, वहीं सर्वजन हिताय पुस्तकों की चोरी, पाठकों की संग्रह वृत्ति को दमित करना भी आवश्यक है।

ज्ञान के भंडार पुस्तकालयों की समुचित व्यवस्था व प्रसार की आवश्यकता को पूर्ण करना महत्वपूर्ण कदम होगा जिसमें सभी संगठनों सरकारी, गैर-सरकारी व सामाजिक संस्थाओं के हार्दिक सक्रिय सहयोग अपेक्षित हैं।

[10]

12. सेवा में,

आदरणीय श्रीमान

हिंदी अध्यापक,

सरस्वती इंटर कॉलेज, आगरा।

विषय-हिंदी विषय की पुस्तक के संबंध में

महोदय,

मैं आपका परम शिष्य हूँ। मुझे ज्ञात हुआ है कि आपने कक्षा 10 हिंदी 'अ' की एक पुस्तक सरल एवं शुद्ध भाषा में लिखी है। जिसे आकर्षक रूप में इंस्पिरेशन पब्लिकेशन, इंडिया ने प्रकाशित किया है।

आपकी महती कृपा होगी यदि उक्त पुस्तक मुझे उपलब्ध हो सके। आपका आभार मानूँगा।

आपका आज्ञाकारी शिष्य

शशिकांत पचौरी

पचोखरा, आगरा

[5]

अथवा

प्रारूप/औपचारिकताएँ	**[1]**
विषय सामग्री	**[3]**
भाषा	**[1]**
	(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016)

व्याख्यात्मक हल

सेवा में,

प्रधान डाक अधीक्षक

मुख्य डाकघर, नामनेर, आगरा

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मैं बी ब्लॉक, कमला नगर आगरा का निवासी हूँ। मैं अपने इस पत्र के माध्यम से आपको अवगत करना चाहता हूँ कि मैं जरूरी कार्य से परिवार सहित बाहर जा रहा हूँ। मेरी आवश्यक डाक आपके डाकखाने में आएगी। आप कृपया पहली जून से 20 जून तक आई मेरी डाक अपने डाकघर में सँभालकर रखिएगा। जब मैं 20 जून के बाद घर वापस आऊँगा, तब मैं आपके डाकघर से अपनी डाक प्राप्त कर लूँगा। आपकी बड़ी कृपा होगी।

सधन्यवाद

भवदीय

श्याम सिंह राठौर

ब्लॉक बी, कमला नगर आगरा

मो. 98997181....

दिनांक-25 मई 20....

14.

रिक्त पदों पर भर्ती

ज्ञान विद्या मंदिर, सरस्वती नगर फिरोजाबाद

कुल पद-08

पदों का विवरण-लेखाधिकारी, क्लर्क तथा चपरासी।

शैक्षणिक योग्यता-पदों के अनुसार अलग-अलग

अंतिम तिथि-15 जुलाई 20...

आयु सीमा-उम्मीदवारों की अधिकतम आयु 30-35 वर्ष पदानुसार निर्धारित की गई है।

आवेदन प्रक्रिया- आवेदन पत्र का प्रारूप विद्यालय के कार्यालय से प्राप्त करें ।

दिए गए प्रारूप को निर्देशानुसार भरकर आवेदन करें।

चयन प्रक्रिया-विज्ञापित पदों पर चयन लिखित परीक्षा और साक्षात्कार के द्वारा किया जाएगा।

[5]

अथवा

बिकाऊ है

भूमि/भूखंड

हरिद्वार की पावन धरती पर पतंजलि आश्रम के पास 200 वर्ग मीटर का आवासीय प्लाट मात्र ₹10 लाख में।

संपर्क करें- 99978592...

● ●

हिंदी 'अ'

प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र

उत्तरमाला

7

सी.बी.एस.ई., कक्षा X

खंड 'क' अपठित बोध 10

1. (क) वर्तमान की स्थिति यह है कि मगहर बदला हुआ है। लड़कियों की पढ़ाई और उनकी नौकरी पर ध्यान दिया जाने लगा है लेकिन सामाजिकता का लोप होने लगा है। इतना बदलाव देखने को मिलता है कि किसी के विवाह या मरे-गिरे में भी पहले जैसे लोग एकत्र नहीं होते। **[2]**

(ख) पंडरी गाँव कुशीनगर के अत्यंत समीप होने के बाद भी विकास का एक कण भी यहाँ नहीं पहुँचा था। मगर यहाँ के युवा सजग हैं, वे अपने प्रयास से स्कूल भी चलाते हैं। **[2]**

(ग) लेखक सवेरे-सवेरे केसरिया गाँव पहुँचे। सामाजिक और पारिवारिक विघटन के इस दौर में एकमात्र संयुक्त परिवार मिला। उस परिवार की सबसे बुजुर्ग महिला के पास तीज-त्यौहार, गीत-गवनई का अनुपम भंडार था लेकिन नई पीढ़ी इसे सीखने में रुचि नहीं रखती थी। **[2]**

(घ) लेखक ने मगहर के विषय में बताया कि मगहर कुशीनगर से लगभग 20 किलो मीटर की दूरी पर है। विकास का नामो निशान यहाँ पर नहीं है पर यहाँ के युवा सजग हैं। वे स्वप्रयास से विद्यालय भी चलाते हैं। लेखक रात को बौद्धमठ में ठहरा।

(ङ) कबीर की निर्वाण भूमि का नाम 'मगहर' नामक स्थान है जो कुशीनगर के पास स्थित है। **[1]**

(च) सांप्रदायिक भेद-भाव से ऊपर उठाने के कबीर के प्रयास पर पानी फिर गया था। **[1]**

खंड 'ख' व्यावहारिक व्याकरण 16

2. (क) मिश्र वाक्य। **[1]**

(ख) मैं ढीठ बन गया और उनकी सहिष्णुता का अनुचित लाभ उठाने लगा। **[1]**

(ग) मेरा सारा समय पतंगबाजी की भेंट होता था क्योंकि मुझे कनकौए उड़ाने का नया शौक पैदा हो गया था। **[1]**

(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016)

(घ) ईमानदार व्यक्ति ही सच्चे सम्मान का अधिकारी है। **[1]**

3. (क) मैंने समय की पाबंदी पर निबंध लिखा। **[1]**

(ख) मेरा मित्र चल नहीं सकता। **[1]**

(ग) उनके सामने किससे बोला जा सकेगा/जाएगा। **[1]**

(घ) भाई साहब द्वारा/के द्वारा मुझे पतंग दी गई। **[1]**

(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016)

4. **(क)** सुरेश-व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, संबोधन कारक [1]

(ख) मैं-पुरुषवाचक सर्वनाम, पुल्लिंग/स्त्रीलिंग, एकवचन, 'हो जाऊँ क्रिया का कर्ता। [1]

(ग) घर की-जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिंग, संबंध कारक। [1]

(घ) रुक जाएगी-अकर्मक क्रिया, स्त्रीलिंग, एकवचन, भविष्यकाल, कर्तृवाच्य [1]

(व्याकरणिक कोटि (भेद सहित) की सही पहचान और अन्य में से किसी एक बिंदु पर उल्लेख अपेक्षित)

(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016)

5. **(क)** (*i*) शृंगार रस। [1]

(*ii*) भयानक रस। [1]

(*iii*) हास्य रस [1]

(ख) उत्साह [1]

(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2015)

खंड 'ग' पाठ्यपुस्तक तथा पूरक पाठ्यपुस्तक 34

6. **(क)** बनाव-शृंगार पर ध्यान न देकर अपने लक्ष्य के प्रति एकनिष्ठता और एकाग्रता का संदेश। [2]

(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016)

व्याख्यात्मक हल-एक दिन उनकी शिष्या ने डरते-डरते बाबा को टोका- उसने कहा कि उनके सारे संगीत की जगत में बहुत प्रतिष्ठा है और उन्हें 'भारतरत्न' जैसा सर्वोच्च सम्मान प्राप्त हो चुका है। अत: फटी लुंगी पहनकर लोगों से मिलना उनके स्तर वाले व्यक्ति को शोभा नहीं देता। तब उन्होंने शिष्या को समझाया। इस कथन में युवावर्ग के लिए यह संदेश है कि बनाव-शृंगार पर ध्यान न देकर अपने लक्ष्य के प्रति एक निष्ठता और एकाग्रता रखनी चाहिए। तभी वे अपने मुकाम पर पहुँच सकते हैं।

(ख) अभ्यास के बिना कला या कार्य के स्तर और गुणवत्ता में कमी आने लगती है, इसी कारण बिस्मिल्ला खाँ आजीवन अभ्यास करते रहे। [2]

(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016)

व्याख्यात्मक हल-बिस्मिल्ला खाँ शहनाई बजाने वाले एक महान् कलाकर थे। वे घंटों रियाज करते हुए अपनी कला की उपासना करते थे। किसी भी कला या कार्य की सफलता के लिए अभ्यास होना बहुत ही आवश्यक है। अभ्यास के बिना कला या कार्य के स्तर और गुणवता में कमी आने लगती है, इसी कारण बिस्मिल्ला खाँ आजीवन अभ्यास करते रहे।

(ग) शिष्या के टोकने में व्यंग्य या अपमान का नहीं अपितु अपनत्व का भाव था। [2]

(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016)

व्याख्यात्मक हल-शिष्या द्वारा टोके जाने पर बिस्मिल्ला खाँ ने बुरा नहीं माना बल्कि बड़े लाड़ से मुस्कराते हुए कहा कि 'भारतरत्न' का सम्मान उन्हें शहनाई वादन पर मिला है न कि लुंगी पर, क्योंकि विचारों और व्यवहार में उदारता व अपनत्व का भाव था।

7. **(क)** लेखिका की दृष्टि में माँ का स्वतंत्र व्यक्तित्व नहीं था। माँ का त्याग, धैर्य और सहिष्णुता विवशता से उत्पन्न थी। [2]

(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016)

व्याख्यात्मक हल-लेखिका स्वयं स्वतंत्र विचारों वाली, अपने अधिकार और कर्तव्य को समझने वाली, पर माँ पिताजी की हर ज्यादती को अपना प्राप्य समझकर सहन करती। माँ की मजबूरी में लिपटा उनका त्याग व सहनशीलता कभी भी लेखिका का आदर्श न बन सके।

(ख) • कॉलेज का अनुशासन बिगाड़ने के आरोप में थर्ड इयर की कक्षाएँ बंद कर दी गईं और लेखिका और उनकी सहयोगियों का प्रवेश निषिद्ध कर दिया गया। लेकिन छात्राओं के हुड़दंग मचाने पर उन पर लगे प्रतिबंध को हटा दिया गया। यही खुशी स्वतंत्रता मिलने की खुशी में समा गई। **[2]**

(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016)

व्याख्यात्मक हल-कॉलेज वालों ने शीला अग्रवाल और मन्नू भंडारी की गतिविधियों को देखकर उन्हें कॉलेज से निकाल दिया और कॉलेज का अनुशासन बिगाड़ने के आरोप में थर्ड इयर की कक्षाएँ बंद कर दी गईं। लेखिका तथा उनकी सहयोगियों का प्रवेश निषिद्ध कर दिया गया, लेकिन कॉलेज से बाहर रहते हुए भी लेखिका और छात्राओं ने इतना हुड़दंग मचाया कि कॉलेज वालों को हार मानकर अगस्त में थर्ड इयर की कक्षाएँ फिर चालू करनी पड़ीं। यही खुशी स्वतंत्रता मिलने की खुशी में समा गई।

(ग) मुहर्रम से बिस्मिल्ला खाँ का अत्यधिक जुड़ाव था। मुहर्रम महीने में खाँ साहब हजरत इमाम हुसैन एवं उनके वंशजों के प्रति पूरे दस दिनों तक शोक मनाते थे।

मुहर्रम की आठवी तारीख को बिस्मिल्ला खाँ खड़े होकर शहनाई बजाते थे। वे दाल मंडी में फातमान के लगभग आठ किलोमीटर की दूरी तक रोते हुए नौहा बजाते पैदल ही जाते थे। उनकी आँखें इमाम हुसैन और उनके परिवार के लोगों की शहादत में भीगी रहती थीं। उन दिनों में वे न तो शहनाई बजाते थे और न ही किसी संगीत कार्यक्रम में शामिल होते थे। उस समय एक महान संगीतकार का सहज मानवीय रूप देखकर, उनके प्रति अपार श्रद्धा उत्पन्न हो जाती थी। **[2]**

(घ) फादर बुल्के को हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्थापित करने की चिंता थी। उसके लिए वे अकाट्य तर्क देते थे और साथ ही इसलिए भी चिंतित थे क्योंकि हिंदी वाले ही हिंदी की उपेक्षा कर रहे हैं। **[2]**

(ङ) कबीर अपने समय के एक महान समाज सुधारक थे। उन्होने समाज में जन्मी अनेक बुराइयों को दूर करने का प्रयास किया जैसे- ऊँच-नीच, जाति-पाति, बाह्य आडंबर आदि। कबीर किसी एक जाति, धर्म तथा देश का कल्याण नहीं करना चाहते थे वरन समूची मानव जाति का कल्याण करना चाहते थे। उनके इन्हीं गुणों के कारण बाल गोबिन भगत को उन पर अगाध श्रद्धा थी। **[2]**

8. **(क)** मुनिवर स्वयं को महान योद्धा मान रहे हैं। लक्ष्मण इसी वीरता प्रदर्शन पर व्यंग्य कर रहे हैं। **[2]**

(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2015)

व्याख्यात्मक हल-लक्ष्मण ने परशुराम पर व्यंग्य किया कि आपके कहने पर मैंने आपको महान योद्धा मान लिया है।

(ख) जिस प्रकार फूँक से पहाड़ नहीं उड़ सकता वैसे ही मैं आपके फरसा दिखाकर डराने से डरने वाला नहीं हूँ। **[2]**

(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2015)

व्याख्यात्मक हल-लक्ष्मण परशुराम को हँसकर उत्तर दे रहे हैं कि आपके फरसा दिखाने भर से मैं डरने वाला नहीं हूँ। उदाहरण देकर स्पष्ट किया कि जिस प्रकार फूँक मारने से पर्वत को नहीं उड़ाया जा सकता, वैसा मुझे मत समझो।

(ग) सभा में उपस्थित कोई भी इतना कमजोर नहीं है, जो उनकी बातों से भयभीत हो जाए। लक्षमण भी कोई काशीफल का फूल नहीं है जो उनकी तरजनी देखकर मुरझा जाएगा अर्थत वे इतने कमजोर नहीं है जो परशुराम जी की बातों से भयभीत हो जाएगे। **[2]**

(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2015)

9. **(क)** ● लक्ष्मण व्यंग्यपूर्ण वचन बोलते थे जबकि परशुराम अहंकारी थे।
● लक्ष्मण में बालसुलभ उग्रता और चंचलता थी जबकि परशुराम के स्वभाव में परिपक्वता झलकती है।
[1 + 1 = 2]

(ख) ● राम-लक्ष्मण सरल-साधारण बालक नहीं अपितु वीर योद्धा हैं।
● राम-लक्ष्मण के लिए प्रयुक्त हुआ है। **[1 + 1 = 2]**

(ग) बेटी के भावी जीवन की संभावित परिस्थितियों के बारे में सीख देकर कि-
● सौंदर्य, वस्त्र और आभूषणों के मोह में न उलझे।
● प्रतिकूल परिस्थितियों में अनुचित निर्णय न ले, कमजोर न पड़े।
● अपने नारी-सुलभ गुणों को अपनी कमजोरी न बनने दे। **[2]**

(घ) ● जीवन के प्रति लड़की की समझ सीमित थी।
● वह जीवन के सिर्फ सुखद पक्ष से ही परिचित थी, दु:खद पक्ष से नहीं। **[1 + 1 = 2]**

(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016)

व्याख्यात्मक हल

(घ) लड़की अभी भोली व सरल थी तथा उसमें सांसारिक चतुराई और समझदारी का भी विकास नहीं था, उसने अब तक जीवन में सुख का अनुभव किया था, जीवन के दु:खद पक्ष से वह अनजान थी।

(ङ) संगतकार जैसे व्यक्ति स्वयं पृष्ठभूमि में रहकर मुख्य गायक को प्रसिद्धि यश दिलवाते हैं। ऐसे व्यक्ति गायन का श्रेय स्वयं नहीं लेते अपितु जिनका वह साथ देते हैं उन्हें ही प्रकाश में लाना उनका उद्देश्य होता है अत: ऐसे समर्पित व्यक्ति जीवन में बहुत उपयोगी माने जाते हैं।

10. **(क)** भोलानाथ बचपन में तरह-तरह के नाटक खेला करता था, उनके चबूतरे का एक कोना ही नाटकघर बनता था, बाबूजी जिस छोटी चौकी पर बैठ कर स्नान करते थे, उसे रंग मंच का रूप दिया जाता था। उसी चौकी पर सरकंडे के खंभों पर कागज का चंदाओ तानकर मिठाइयों की दुकान लगाई जाती। इस दुकान में चिलम के खोंचे पर कपड़े के थालों में ढेले के लड्डू, पत्तों की पूरी-कचौरियाँ, गीली मिट्टी की जलेबियाँ, फूटे घड़ों के टुकड़ों के बताशे आदि मिठाइयाँ सजाई जाती थीं। ठीकरों के बटखरे और जस्तों के टुकडों के पैसे बनते थे। **[3]**

(ख) सैलानियों को प्रकृति की अनुपम छटा का अनुभव करवाने में निम्न लोगों का योगदान होता है -
(i) सर्वप्रथम सैलानियों को एक कुशल गाइड की आवश्यकता होती है।
(ii) व्यवस्था में लगे रहने वाले सरकारी कर्मचारी।
(iii) पर्यटन स्थल पर रहने वाले स्थानीय निवासियों का योगदान।
(iv) पर्यटन स्थल के पेड़, पौधे, फूल, झरने एवं वन्यजीवों का भी योगदान।
(v) वे सहयोगी यात्री जो यात्रा के दौरान मस्ती भरा वातावरण बनाए रखते हैं और कभी निराश नहीं होने देते, और स्वयं भी स्फूर्तिवान बने रहते हैं। **[3]**

(ग) 'जार्ज पंचम की नाक' पाठ के माध्यम से लेखक ने समाज पर व्यंग्य करते हुए सरकारी तंत्र के खोखलेपन तथा अवसरवादिता को अत्यंत प्रतीकात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत लेख भारत के अधिकारियों की स्वाभिमान शून्यता पर करारा वयंग्य है जो कि अभी भी मानसिक रूप से गुलाम है।

प्रस्तुत लेख में आज की पत्रकारिता के दौर को भी बखूबी समझाया गया है कि आज की पत्रकारिता युवा पीढ़ी को भ्रमित एवं कुंठित करती है, युवा पीढ़ी देश की रीढ़ होती है, उसके कमजोर होने से देश कहाँ जाएगा। क्योंकि आज की पत्रकारिता दबंग और अपराधी छवि वाले व्यक्तियों को नायक की तरह प्रस्तुत करती है। **[3]**

खंड 'घ' लेखन 20

11. (क) महानगरों में महिलाओं की सुरक्षा

महानगर से तात्पर्य उन बड़े नगरों से है जिनकी आबादी लाखों की संख्या में है और प्रतिवर्ष हजारों व्यक्ति यहाँ आकर इनकी जनसंख्या में बढ़ोत्तरी कर देते हैं। गाँवों से महानगरों की ओर यह पलायन रोजी-रोटी (रोजगार) शिक्षा, सुरक्षा प्राप्त करने के लिए होता है। महानगरों का सामान्य अभिप्राय दिल्ली, मुंबई कलकत्ता चेन्नई, बंगलौर, हैदराबाद, कानपुर, लखनऊ जैसे नगरों से है, जहाँ की आबादी लाखों की संख्या में है तथा प्रतिवर्ष आस-पास के गाँवों से ही नहीं अपितु सुदूर प्रांतों से रोजगार पाने के लिए लाखों की संख्या में पुरुष व महिलाएँ इन महानगरों में आते हैं और यहीं के होकर रह जाते हैं।

परतंत्रता के बंधन तोड़कर जहाँ महानगरों में रहने वाली भारतीय नारी अपने गौरव और शालीनता की प्रतिष्ठा करके हमारी श्रद्धा की भाजन रही है वहीं वह पश्चिम के अंधानुकरण से भारतीय नारी के आदर्श को तिलांजलि देने की ओर अग्रसर हो रही हैं। वह नारी सुलभ दया, कोमलता, स्नेह, विश्वास, क्षमा आदि से वंचित होती हुयी महानगरीय नारी में अब एक परिवर्तन वेशभूषा, पहनावा, खान-पान में भी दिखने लगा है। पहले नारियों की पोशाक ऐसी होती थी जिसमें उनका बदन ढका रहे किंतु अब सिनेमा और टी.वी. से फैशन ग्रहण कर सामान्य परिवारों की लड़कियाँ व महिलाएँ भी छोटे-छोटे कपड़े पहनने लगी हैं साथ ही महानगरों, डिस्कों, डेटिंग, चैटिंग व नशीले पदार्था का सेवन जिनमें शराब, सिगरेट, ड्रग्स आदि तो उनके जीवन का अहम हिस्सा बन गया है।

वर्तमान युग में महँगाई की समस्या ने विकट रूप धारण कर लिया है अत: महिलाएँ भी अर्थोपार्जन में पीछे नहीं रहना चाहतीं, महिलाओं को घर और परिवार की दोहरी भूमिका (जिम्मेदारी) निभानी पड़ती है इसीलिए उनकी समस्याओं में भी वृद्धि हुई हैं। नौकरी करनेवाली अधिकांश महिलाओं को अपने कार्यालयों में यौन उत्पीड़न का शिकार भी होना पड़ता है। घर तथा बाहर दोहरी भूमिका का निर्वाह करने वाली महिलाएँ प्राय: अपने बच्चों के प्रति अपनी जिम्मेदारी पूरी नहीं कर पातीं, इनके बच्चे स्वयं को उपेक्षित भी महसूस करते है, इन महिलाओं को कभी-कभी पति के संदेह का शिकार भी होना पड़ता है। परिणाम-स्वरूप कुछ महिलाएँ तो विभिन्न प्रकार की कुठांओं का शिकार भी हो जाती हैं।

सरकार ने महिलाओं को सुरक्षा प्रदान करते हुए कई नवीन कानूनों का प्रावधान किया है। अब पवित्रता संबंधी मानदंडो में भी बदलाव दिखाई दे रहा है जिसका परिणाम 'लिव इन रिलेशनशिप' के रूप में दिखाई दे रहा है। घरेलू हिंसा कानून, दहेज विरोधी कानून भी महिलाओं के हक में हैं। **[10]**

(ख) कंप्यूटर-उपयोगिता एवं महत्व

प्रस्तावना-आज के वैज्ञानिक युग में कंप्यूटर का स्थान सर्वोपरि होता जा रहा है। आज चारों ओर कंप्यूटर ही छाया हुआ है। कंप्यूटर आज की महती आवश्यकता बन गया है। यदि आज के युग को कंप्यूटर युग कहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। कंप्यूटर बनाते समय चार्ल्स बेवेज ने सोचा भी न होगा कि यह यंत्र सबकी दिनचर्या का अभिन्न अंग बन जाएगा। यह एक ऐसा यंत्र है जो बिजली की शक्ति से संचालित होता है। यह मानव मस्तिष्क की अपेक्षा तीव्र गति से गणना कर सकता है।

कंप्यूटर और उसके उपयोग-कंप्यूटर का उपयोग आज जीवन के हर क्षेत्र में हो रहा है। बैंक, रेल, हवाई टिकट आरक्षण, प्रकाशन, सूचना और समाचार प्रेषण, डिजाइनिंग, शिक्षा, वैज्ञानिक अनुसंधान, औद्यौगिक क्षेत्र में, युद्धक्षेत्र में, संगीत में, कला में-हर क्षेत्र में कंप्यूटर का बोलबाला है। ऐसा प्रतीत होता है कि कंप्यूटर के बिना जीवन का कोई काम नहीं हो सकता। यदि किसी दिन 'इंटरनेट' की समस्या हो तो सारी बैंकिंग व्यवस्था धराशायी हो जाती है और लोगों को पैसों के लेन-देन के लिए तब तक प्रतीक्षा करनी पड़ती है जब तक इंटरनेट व्यवस्था ठीक न हो जाए और कंप्यूटर काम न करने लगे।

लेखा-विभाग में तो कंप्यूटर की भूमिका चमत्कारी है। कार्यालयों के आय-व्यय का ब्यौरा, कर्मचारी के वेतन तथा असंख्य खातों का हिसाब कंप्यूटर में सुरक्षित रहता है। प्राप्तियों को भी कंप्यूटर पर ही रिकॉर्ड कर लिया जाता है।

मनोरंजन के क्षेत्र में भी कंप्यूटर काफी आगे निकल गया है। कई तरह के खेल कंप्यूटर पर खेले जाने लगे हैं। आज कंप्यूटर की आवश्यकता रक्षा और अतंरिक्ष के क्षेत्रों में सर्वाधिक है।

कंप्यूटर आज के युग में अनिवार्य बन चुका है। कोई भी प्रतिष्ठान इसके अभाव में अधूरा-सा प्रतीत होता है, क्योंकि इसके न होने से कार्य में तेजी नहीं आ पाती।

कंप्यूटर और मानव मस्तिष्क-कुछ लोग प्रश्न करते हैं कि मानव मस्तिष्क और कंप्यूटर में अंतर है तथा दोनों में कौन श्रेष्ठ है? निश्चित रूप से मानव मस्तिष्क ही श्रेष्ठ है, क्योंकि कंप्यूटर प्रणाली का निर्माण भी तो मानव मस्तिष्क ने ही किया है। मानव मस्तिष्क में खोज और आविष्कार की जो चेतना है, अच्छे बुरे की परख है, यह कंप्यूटर में नहीं है, वहाँ तो आंकड़ों की गतियुक्त गणना है और वे आंकड़े किसी परिस्थिति के प्रभाव के विश्लेषण की उपलब्धि है जिनकी गणना त्रुटिपूर्ण भी हो सकती है, भविष्यफल गलत भी हो सकता है। वहाँ कठिन नियंत्रण एक वैज्ञानिक प्रक्रिया और जटिल गणना है। मनुष्य का ज्ञान, रुचि, अनुभव चिंतन, विचार क्रिया को प्रभावित कर सकते हैं, किंतु कंप्यूटर का मस्तिष्क इन सबसे परे यांत्रिक गति के नियंत्रण में आबद्ध है। वह तो भावना से रहित होता है। उसमें मानव के समान निर्णय लेने की शक्ति नहीं है। कंप्यूटर मनुष्य की तरह स्वयं कुछ भी नहीं सोच सकता। परंतु कंप्यूटर की स्मरण शक्ति असीमित है। मनुष्य बहुत प्रयत्न के बाद भी जब तथ्यों, नामों, स्थानों और सूचनाओं को स्मरण नहीं कर पाता तब कंप्यूटर ये सारे काम आनन-फानन में कर डालता है। नाम, तिथि, स्थल सरलता से कंप्यूटर प्रणाली से ज्ञात हो सकते हैं।

उपसंहार-आज परिवहन, इंडस्ट्रीज, चिकित्सा क्षेत्र, मौसम की आगामी सूचनाओं के सही संग्रह में कंप्यूटर बेजोड़ है। कंप्यूटर के कारण प्रत्येक क्षेत्र में विकास की गति दस गुनी से लेकर हजार गुनी तक बढ़ चुकी है। वास्तव में कंप्यूटर मानव को प्राप्त हुई वह अचूक शाक्ति है जिसके सदुपयोग से वह असंभव से प्रतीत होने वाले कार्यों को अद्‌भुत तीव्रता से कर सकता है। **[10]**

(ग) व्यायाम और स्वास्थ्य

प्रस्तावना-शक्ति और संपन्नता के लिए खेलकूद और व्यायाम परम आवश्यक है। स्वस्थ रहने के लिए हर व्यक्ति को व्यायाम करना चाहिए। किसी देश के नागरिक जितने स्वस्थ और सबल होंगे, वह देश उतना ही शक्तिशाली और संपन्न होगा।

व्यायाम का तात्पर्य-महर्षि चरक ने व्यायाम का अर्थ स्पष्ट करते हुए लिखा है कि शरीर की जो चेष्टा देह को स्थिर करने एवं उसका बल बढ़ाने वाली हो, उसे व्यायाम कहते हैं। तात्पर्य यह है कि मन को आनंदित, शरीर को शक्तिशाली और स्फूर्तिमय बनाने के लिए हम जो शारीरिक क्रियाएँ करते हैं, उन्हीं को व्यायाम कहते हैं; उदाहरण, योगासन, दौड़ना, खेलना आदि।

व्यायाम के रूप-प्रमुख रूप से व्यायाम दो प्रकार के होते हैं-(अ) मानसिक व्यायाम (ब) शारीरिक व्यायाम।

(अ) मानसिक व्यायाम-मानसिक व्यायाम में चिंतन मनन किया जाता है जिससे मन की शक्ति बढ़ती है और बौद्‌धिक विकास होता है।

(ब) शारीरिक व्यायाम-शारीरिक शक्ति बढ़ाने के लिए किया जाता है। जिससे व्यक्ति बलबान बनता है।

व्यायाम से लाभ-व्यायाम का सबसे बड़ा लाभ यह है कि व्यायाम से शरीर में स्वस्थ खून का संचार होता है और हमारा पाचन-तंत्र ठीक से काम करने लगता है। हमारे शरीर का एक-एक अंग पुष्ट और मजबूत हो जाता है तथा हमारा मन उल्लास और उमंग से भर जाता है।

सावधानियाँ-शारीरिक शक्ति के ही अनुसार व्यायाम का चयन करना चाहिए क्योंकि कुछ व्यायाम ऐसे भी होते है जिन्हें पुरुष ही कर सकते है और कुछ व्यायाम ऐसे भी होते है जिन्हें महिलाएँ भी आराम से कर लें। उम्र और शक्ति के अनुसार व्यायाम का चयन न करने पर भी व्यायाम हांनिकारक भी सिद्‌ध होते हैं। उदाहरण के तौर पर छोटे बच्चे द्‌वारा अत्यधिक दंड बैठक लगाना या बूढ़े व्यक्ति द्‌वारा तेजी से दौड़ना हानिकारक होता है। अत: व्यायाम उतना ही करना चाहिए जिससे कि हमें अधिक थकान न हो।

शिक्षा और खेलकूद-स्वस्थ शरीर के बिना कोई भी कार्य भली प्रकार संपन्न नहीं किया जा सकता है। शिक्षा प्राप्त करने के लिए भी स्वस्थ मन-मस्तिष्क और शरीर की आवश्यकता होती है। यह सब व्यायाम या

खेलकूद से ही प्राप्त किया जा सकता है। इसीलिए कहा भी गया है कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क रहता है।

उपसंहार-हम भारत का इतिहास उठाकर देखें तो यह देश तेजस्वियों और वीरों से भरा पड़ा है। ये वीर पुरुष बिना व्यायाम और अच्छे स्वास्थ्य के अस्तित्व में नहीं आ सकते थे। आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में मल्ल युद्ध या कुश्ती के लिए अखाड़ों का प्रचलन है। खिलाड़ियों को पुरस्कृत और सम्मानित कर व्यायाम को प्रोत्साहन दिया जाता है। **[10]**

12.

प्रारूप/औपचारिकताएँ	**[1]**
विषय सामग्री	**[3]**
भाषा	**[1]**
(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016)	**[5]**

मित्र को पत्र

व्याख्यात्मक हल

विनीत छात्रावास

गोमती नगर, लखनऊ

दिनांक-10 अक्टूबर 20...

प्रिय मित्र,

सस्नेह नमस्कार।

कल ही प्राप्त हुए पत्र से तुम्हारा हाल-चाल पता चला। इस पत्र में तुमने जर्मनी में मनाए जाने वाले पर्वो का बड़ा ही सुंदर वर्णन भी किया है। अब मैं अपने पत्र के माध्यम से तुम्हें भारत में मनाए जाने वाले त्यौहारों से अवगत कराना चाहता हूँ। भारत त्योहारों का देश है जिनमें दीपावली, होली, रक्षाबंधन, दशहरा, जन्माष्टमी, करवाचौथ, ईद, लोहड़ी, वसंतपंचमी, बैसाखी, 15 अगस्त, 26 जनवरी, 2 अक्टूबर, 14 नवंबर आदि प्रमुख हैं। लेकिन इनके अलावा भी अनेक त्योहार मनाए जाते हैं। दीपावली प्रकाश का पर्व है तो दशहरा असत्य पर सत्य की जीत का। होली में सभी लोग पुराने वैर-भावों को भूलकर एक-दूसरे से गले मिलते हैं। भारतीय जन हर त्योहार को बड़े ही धूमधाम से मनाते हैं।

मित्र! इस पत्र में इतनी जानकारी पर्याप्त है। शेष अगले पत्र में लिखूँगा। अपने माता-पिता को मेरा प्रणाम कहना तथा छोटे को प्यार देना।

तुम्हारा अभिन्न सुहृद

अ.ब.स.

अथवा

2/1 विभव नगर

सेक्टर बी, फिरोजाबाद

दिनांक .....

प्रिय सुनीता,

प्रसन्न रहो,

तुम्हारा पत्र मिला। पढ़कर चिंता हुई कि तुम्हारा स्वास्थ्य अभी भी पूर्ण रूप से ठीक नहीं चल रहा है। मुझे तुम्हारी सहेली मीरा से पता चला है कि तुम सवेरे देर से उठती हो तथा योगासन करना भी छोड़ दिया है जिसके कारण तुम्हारे स्वास्थ्य पर भी गलत असर पड़ रहा है और पढ़ाई के प्रति एकाग्रचित नहीं हो पा रही हो।

प्रिय सुनीता; योगासन से शरीर में रक्त का संचार बढ़ता है, आलस्य दूर होता है, शरीर की माँस-पेशियाँ सुदृढ़ होती हैं। योगासन तथा योग करने वाले छात्रों का मन पढ़ाई में भी खूब लगता है तथा उनकी स्मरण-शक्ति भी

बढ़ती है। तुमने पढ़ा ही होगा ''स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का वास होता है।'' अत: मेरी सलाह है कि नियमित योग तथा व्यायाम करने का अभ्यास करो।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि तुम मेरी सलाह पर तुरंत अमल शुरू कर दोगी तथा पत्र द्वारा मुझे सूचित भी करोगी।

तुम्हारी बहिन

शकुंतला

13.

सेल्स / मार्केटिंग

आवश्यकता है-खाद्य तेल कंपनी हेतु आगरा के लिए अनुभवी सेल्स ऑफीसर की।
पता गोयल आयल कंपनी लिमिटेड, छत्ता बाजार आगरा।
मोबाइल नंबर-98370621.....

[5]

अथवा

सिक्योरिटी

आवश्यकता है-रिटायर्ड फौजियों की सिक्योरिटी गार्ड, गनमैन एवं सुपरवाईजर पद पर कार्य हेतु।
मिलें-राठी सिक्योरिटी, कमला नगर चौक, आगरा।
मोबाइल नंबर 9312058...., 0562 2525xxx

● ●

हिंदी 'अ'

प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र

उत्तरमाला

8

सी.बी.एस.ई., कक्षा X

खंड 'क' अपठित बोध 10

1. (क) लोभ-मोह, काम-क्रोध आदि विकार मनुष्य में स्वाभाविक रूप में विद्यमान रहते हैं, पर उन्हें प्रधान शक्ति मान लेना और अपने मन तथा बुद्धि को उन्हीं के इशारे पर छोड़ देना बहुत निकृष्ट आचरण है। [2]

(ख) इस देश के कोटि-कोटि दरिद्र-जनों की हीन अवस्था को सुधारने के लिए अनेक कायदे कानून बनाए गए। [2]

(ग) जिन लोगों को कायदे-कानून कार्यान्वित करने की जिम्मेदारी सौंपी गई वे अपने कर्त्तव्यों को भूलकर अपनी सुख-सुविधा की ओर अधिक ध्यान देने लगे। [2]

(घ) भारतवर्ष ने भौतिक वस्तुओं के संग्रह को कभी भी बहुत अधिक महत्व नहीं दिया। लोभ-मोह, क्रोध जैसे विकारों को सदैव संयम से बाँध कर रखने का प्रयत्न किया है। [2]

(ङ) दकियानूसी का पर्यायवाची है 'रूढ़िवादी'। [1]

(च) 'लोभ-मोह' में द्वंद्व समास है। [1]

खंड 'ख' व्यावहारिक व्याकरण 16

2. (क) मिश्र वाक्य। [1]

(ख) यह वही नहर है जिसे अनेक गुमनाम और अनपढ़ माने गए लोगों ने बनाया था।

अथवा

इस नहर को ऐसे अनेक लोगों ने बनाया जो गुमनाम और अनपढ़ माने गए। [1]

(ग) उन्हें नमक कर एक सामान्य सा मुद्दा लगता था। [1]

(घ) समय हो गया है परंतु ड्राइवर बस नहीं चला रहा है [1]

(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016)

3. (क) स्वामी विवेकानंद ने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। [1]

(ख) चोट के कारण वह चल नहीं पाता/सकता/ चोट के कारण वह नहीं चलता। [1]

(ग) पशुओं से बोला नहीं जाता/जा सकता। [1]

(घ) प्रेमचंद द्वारा रचित प्रसिद्ध उपन्यास 'गोदान' लिखा गया। [1]

(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016)

4. (क) कब्रिस्तान-जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, संबंध कारक [1]

(ख) छोटे-मोटे-गुणवाचक विशेषण, पुल्लिंग, बहुवचन, 'तनाव' विशेष्य का विशेषण। [1]

(ग) होते हैं-सकर्मक क्रिया, वर्तमान काल, बहुवचन, पुल्लिंग, कर्तृवाच्य। [1]

(घ) मुझे-पुरुषवाचक सर्वनाम, एकवचन, पुल्लिंग/स्त्रीलिंग, कर्ता कारक, 'शामिल होना पड़ा' क्रिया का कर्ता। [1]

(व्याकरणिक कोटि (भेद सहित) तथा अन्य में से किसी एक बिंदु का उल्लेख अपेक्षित)

(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016)

5. **(क)** उत्साह- **[1]**

(ख) उपयुक्त उदाहरण पर पूरे अंक दिए जाएँ। **[1]**

(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016)

व्याख्यात्मक हल- (ख) अभी तो मुकुट बँधा था माथ,
हुए कल ही हल्दी के हाथ।
खुले भी न थे लाज के बोल,
खिले थे चुंबन शून्य कपोल।

(ग) रौद्र रस **[1]**

(घ) शृंगार रस। **[1]**

(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016)

खंड 'ग' पाठ्यपुस्तक तथा पूरक पाठ्यपुस्तक 34

6. **(क)** ● कस्बे के चौराहे पर लगी नेताजी की मूर्ति पर चश्मा लगाने का प्रयास
● इससे कस्बे के लोगों की देशभक्ति और देशभक्तों के प्रति सम्मान की भावना का परिचय मिलता है।
[1 + 1 = 2]
(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2018)

व्याख्यात्मक हल- हालदार साहब सच्चे देशभक्त थे। कस्बे के मुख्य चौराहे पर स्थापित नेताजी की बिना चश्मे वाली मूर्ति पर जब उन्होंने चौड़ा काला फ्रेम देखा तब उन्हें कस्बे के नागरिकों का यह प्रयास सराहनीय लगा। इसका कारण यह था कि वे नेताजी के साथ देशभक्ति की भावना के साथ जुड़े हुए थे।

(ख) स्वार्थपरकता
संवेदनहीनता
सामाजिक नैतिक मूल्यों का ह्रास
● राष्ट्रीयता और देशभक्ति की भावना का अभाव आदि
(किन्हीं दो बिंदुओं का उल्लेख अपेक्षित) **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2018) [1 + 1 = 2]**

व्याख्यात्मक हल- वर्तमान में लोगों ने देशभक्ति को मजाक का विषय बना लिया है। लोग देश की संपत्ति या धरोहर का सम्मान न कर उसका दुरुपयोग करते हैं। पाठ में भी नेताजी की मूर्ति को प्रचार के साधन के रूप में उपयोग किया गया है। देशभक्ति भी मज़ाक की चीज होती जा रही है। प्रस्तुत पंक्ति में इन्हीं स्थितियों की ओर संकेत किया गया है।

(ग) मूर्ति पर लगा चश्मा बदला हुआ था। **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2018) [2]**

व्याख्यात्मक हल-दूसरी बार मूर्ति देखने पर हालदार साहब ने पाया कि चश्मा पहले वाला न होकर बदला हुआ है। पहले मोटे फ्रेमाला चौकोर चश्मा था अब तार के फ्रेम वाला गोल चश्मा है।

7. **(क)** मन्नू भंडारी ने अपने पिताजी के बारे में इंदौर के दिनों की जानकारी देते हुए कहा कि वहाँ उनके पिताजी की समाज में बड़ी प्रतिष्ठा थी, उनका सम्मान था, नाम था। कांग्रेस के साथ-साथ वे समाज सुधार के कार्यो में जुड़े हुए थे। ये पिताजी के खुशहाली के दिन थे और उन दिनों उनकी दरियादिली के चर्चे भी खूब थे। **[2]**

(ख) मन्नू भंडारी की माँ धैर्य और सहन-शक्ति में धरती से कुछ ज्यादा ही थीं। ऐसा इसलिए कहा गया है क्योंकि वे पिताजी की हर ज्यादती को अपना प्राप्य और बच्चों की हर जिद को अपना फर्ज समझकर बड़े सहज भाव से स्वीकार करती थी। उन्होंने जिंदगीभर अपने लिए कुछ नहीं माँगा, कुछ भी नहीं चाहा। केवल दिया ही दिया। इसलिए लेखिका के भाई/बहनों का सारा लगाव भी माँ के साथ था। **[2]**

(ग) उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ को बालाजी के मंदिर पर रोजाना नौबत खाने रियाज के लिए जाना पड़ता थ। वे रसूलनबाई और बतूलनबाई के यहाँ से गुजरने वाले रास्ते से जाते थे क्योंकि इस रास्ते से जाना उन्हें अच्छा लगता था। उन्हें अपने जीवन के आरंभिक दिनों में संगीत के प्रति शक्ति इन्हीं गायिका बहिनों को सुनकर मिली। **[2]**

(घ) भूखे के सम्मुख अच्छे-अच्छे व्यंजनों की प्रशंसा मात्र से भूखे का पेट नहीं भरता लेकिन नवाब साहब का पेट खीरे को मात्र सूँघने से भर गया, यह आश्चर्य की बात है। नवाबी परंपरा समाप्त होने पर भी झूठी शान का दिखावा महत्वहीन होता है। **[2]**

(ङ) आशय यह है कि ऐसी जाति वर्ग एवं समुदाय का विकास नहीं हो सकता जो अपने देश के लिए अपना सब कुछ न्योछावर करने वालों का उपहास उड़ाती है तथा अपने व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए अपने आप को बेचने के लिए हमेशा तैयार रहती है और समय आने पर खुद को बेच भी देती है। हालदार साहब के इस कथन से वर्तमान युवा पीढ़ी की वास्तविकता की झलक मिलती है। **[2]**

8. **(क)** ● जब मुख्य गायक जटिल तानों में खोकर सुर से भटक जाता है तब संगतकार स्थायी को सँभाले रहता है।
● मुख्य गायक की आवाज को सहारा मिलता है और उसे अकेलेपन का अहसास नहीं होता **[1 + 1 = 2]**

(ख) ● मुख्य गायक को
● जब मुख्य गायक सुरों से दूर चला जाता है। **[1 + 1 = 2]**

(ग) मुख्य गायक की कमजोर पड़ती आवाज को संगतकार बिना जताए सहारा देता है। **[2]**

(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2015)

व्याख्यात्मक हल- (ख) यहाँ मुख्य गायक के लिए नौसिखिए प्रयोग किया गया है। जब कभी मुख्य गायक भटक जाता है भूलवश सरगम की सीमाओं को लांघकर अन्यत्र खो जाता है तब संगतकार उसे वैसे ही संभालता है जैसे किसी नौसिखिए के सुर को सँभालता है।

9. **(क)** श्रीराम परशुराम के क्रोधी स्वभाव से परिचित थे और स्वयं भी विनम्रता के धनी थे। वे यह भी जानते थे कि विनम्रता से क्रोध शांत हो जाएगा। **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016) [2]**

व्याख्यात्मक हल-परशुराम के क्रोध को शांत करने के लिए प्रयास करते हुए श्रीराम ने कहा कि शिव धनुष को तोड़ने वाला आपका कोई दास होगा। ऐसा उन्होंने इसलिए कहा, क्योंकि श्रीराम शांत, विनम्र स्वभाव के हैं। उनकी वाणी में मधुरता का गुण विद्यमान है।

(ख) पानी में झाँककर अपने सौंदर्य से अभिभूत मत होना, वस्त्र और आभूषणों को बंधन मत बनने देना। मर्यादाओं का पालन करना परंतु निरीह सहिष्णु बनकर मत रहना। **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016) [2]**

व्याख्यात्मक हल-माँ बेटी को सीख देती है कि लड़कियों जैसी दुर्बलता, कमजोरी और स्त्री के लिए निर्धारित परंपरागत आदर्शों को न अपनाए। लड़की जैसे गुण, संस्कार तो हों लेकिन लड़की जैसी निरीहता कमजोरी नहीं अपनानी है।

(ग) मुख्य गायक की गायिकी को सफल बनाने के लिए संगतकार द्वारा अपनी आवाज को ऊँचा न उठाना उसकी कमजोरी या असफलता नहीं मानना चाहिए। **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016) [2]**

व्याख्यात्मक हल-प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि ने उन सहायक गायक कलाकारों के महत्व को प्रतिपादित करने का प्रयास किया है जो मुख्य गायकों के स्वर से अपना स्वर मिलाकर उनके स्वर को गति प्रदान करते हैं किंतु कभी भी अपनी उन्नति का प्रयास नहीं करते हैं।

(घ) हमारे यहाँ देवता, ब्राह्मण, ईश्वरभक्त तथा गौ पर शूरवीरता नहीं दिखाई जाती क्योंकि इन्हें मारने पर पाप लगता है और इनसे हारने पर बदनामी होती है। **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016) [2]**

व्याख्यात्मक हल-लक्ष्मण ने अपने रघुकुल की उस परंपरा का उल्लेख किया है जिसके अनुसार देवता, ब्राह्मण, भक्त और गाय-इन चारों के ऊपर वीरता नहीं दिखाई जाती, क्योंकि उनका वध करना या उनसे हारना दोनों ही ठीक नहीं माने जाते । इनका वध करने से पाप का भागीदार बनना पड़ता है तथा इनसे हारने पर अपयश फैलता है।

(ङ) कवि ने कविता का शीर्षक उत्साह इसलिए रखा है क्योंकि कवि 'निराला' ने बादलों की गर्जना को उत्साह का प्रतीक माना है। प्रस्तुत कविता 'उत्साह' में ओज गुण विद्यमान है। बादलों की गर्जना नवजीवन का प्रतीक है तथा मनुष्य में उत्साह होना ही उसकी उन्नति का कारण है। जिसमें उत्साह है उसी में जीवन है। **[2]**

10. (क) लोग स्टॉक में घूमते हूए चक्र के बारे में नार्गे ने लेखिका को बताया कि यह धर्मचक्र हैं और उसे घुमाने से सारे पाप धुल जाते हैं। इस पहाड़ी क्षेत्र में भी इस प्रकार के धर्मचक्र के बारे में सुनकर लेखिका को सारे भारत की आत्मा एक लगी क्योंकि इस प्रकार की आस्थाएँ, विश्वास, अंधविश्वास पूरे देश में देखने को मिलते हैं। **[3]**

(ख) भोलानाथ का व्यक्तित्व बचपन से ही नाट्य शैली से ओत-प्रोत था, इसीलिए वे बचपन से ही तरह-तरह के नाटक खेला करते थे। चबूतरे का एक कोना ही नाट्य मंच बना लिया जाता था। बाबूजी जिस छोटी चौकी पर बैठकर स्नान किया करते थे, उसे ही वह रंगमंच बना लेते थे। उसी पर सरकंडे के खंभों पर कागज का चंदोआ बनाकर, मिठाइयों की दुकान लगाई जाती थी। इस दुकान में चिलम के खोंचे पर कपड़े के थालों में ढेले के लडडू, पत्तों की पूरी-कचौरियाँ, गीली मिट्टी की जलेबियाँ, फूटे घड़े के टुकड़ों के बताशे आदि मिठाईयाँ सजाई जातीं। ठीकरों के बँटवारे और जस्ते के छोटे टुकड़ों के पैसे बनते। **[3]**

(ग) रानी एलिज़ाबेथ के आने की खबर से भारतीय अखबारों में निम्नलिखित खबर छप रही थीं-

(i) रानी ने हल्के नीले रंग का सूट बनवाया है जिसका रेशमी कपड़ा हिंदुस्तान से मँगवाया गया है।

(ii) सौ पौंड का खर्चा आना है।

(iii) रानी एलिज़ाबेथ की जन्मपत्री छपना।

(iv) प्रिंस फिलिप के कारनामें व नौकरों बावरचियों, खानसामों तथा अंगररक्षकों की पूरी-पूरी जीवनियाँ छपना।

(v) शाही महल में पलने, रहने वाले कुत्तों की भी तस्वीर अखबार में छपना। **[3]**

खंड 'घ' लेखन **20**

11. (क) विज्ञान के चमत्कार

प्रस्तावना-आधुनिक युग में विज्ञान के नवीन आविष्कारों ने विश्व में क्रांति ला दी है। विज्ञान के अभाव में मानव-जीवन के स्वतंत्र अस्तित्व की कल्पना भी असंभव प्रतीत होती है। मानव विज्ञान की सहायता से प्रकृति पर पूरी तरह विजय प्राप्त करने की ओर अग्रसर हो रहा है। विज्ञान ने अपनी शक्ति से विश्व को आमूल-चूल परिवर्तित कर दिया है। आज हम हजारों किलोमीटर दूर बैठे अपने स्वजनों से घर बैठे न केवल बात कर सकते हैं बल्कि 'वीडियो कांफ्रेंसिंग' के माध्यम से उन्हें देख भी सकते हैं।

विज्ञान के विविध उपयोग-पहिए के आविष्कारों ने एवं बिजली के आविष्कार ने मानव जाति का जितना कल्याण किया उतना कोई सोच भी नहीं सकता। बिजली का उपयोग आज जीवन के हर क्षेत्र में है। बिजली चले जाने पर थोड़ी देर में हम अव्यवस्थित हो जाते हैं और ऐसा लगता है जैसे जीवन की सभी गतिविधियाँ ठप्प हो गई हैं।

संचार, यातायात, परिवहन, चिकित्सा, शिक्षा, कृषि, मनोरंजन, उद्योग के साथ-साथ दैनिक जीवन में विज्ञान की पहली उपयोगिता सिद्ध हुई है। मोबाइल, कंप्यूटर के बिना जीवन अधूरा सा लगता है। नई पीढ़ी के युवा तो इनके बिना जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते।

वर्तमान युग को परमाणु युग कहा जाता है, क्योंकि अणु शक्ति द्वारा मूल्यवान ऊर्जा प्राप्त होती है। इसकी सहायता से परमाणु अस्त्रों का विकास भी किया गया है जो मानवजाति के लिए विनाशकारी है। जापान के हिरोशिमा एवं नागासाकी शहरों पर द्वितीय विश्वयुद्ध में अमेरिका ने जो दो परमाणु बम गिराए थे उनसे भीषण विनाश हुआ था। आज तो उनसे हजारों गुना शक्तिशाली एवं भीषण परमाणु अस्त्रों का विकास हो चुका है।

विज्ञान और मानव-विज्ञान और मानव का संबंध चिरकाल से रहा है। विज्ञान और इसके आविष्कारों का उपयोग जब तक लोक-कल्याण के लिए होता रहेगा तक तक विज्ञान एक चतुर सेवक की तरह है, किंतु जब उसका उपयोग मानव विनाश के लिए होना शुरू हो जाता है तब वही भस्मासुर बनकर उसके लिए अमंगलकारी बन जाता है। कुरुक्षेत्र में इसी कारण दिनकर जी ने लिखा है-

सावधान मनुष्य यदि विज्ञान है तलवार।
तो इसे दे फेंक तजकर मोह स्मृति के पार॥

आज मनुष्य को विवेक जाग्रत करने की आवश्यकता है जिससे वह लोक कल्याण करने की ओर अग्रसर हो, परमाणु अस्त्रों के विनाशक प्रभाव को जानकर उसे अस्त्र-शस्त्रों के निर्माण और संग्रह से बचना जरूरी है अन्यथा विश्व में 'हथियारों की दौड़' पुनः प्रारंभ हो जाएगी।

उपसंहार-विज्ञान की विशेषताओं को देखते हुए कहा जा सकता है कि विज्ञान मानव के लिए वरदान ही सिद्ध हुआ है। वास्तव में विज्ञान स्वयं में एक चमत्कार है। **[10]**

(ख) विद्यार्थी जीवन-

प्रस्तावना-विद्यार्थी ही देश के भावी कर्णधार हैं। निश्चय ही छात्र होना जीवन का महत्वपूर्णकाल है। जन्म के समय बालक अबोध होता है। शिक्षा के द्वारा उसके जीवन का लक्ष्य निर्धारित किया जाता है और उसकी बुद्धि विकसित की जाती है। जिस काल में वह पूर्ण मनोयोग से विद्याध्ययन करता है, उस काल को ही विद्यार्थी जीवन कहते हैं।

विद्यार्थी जीवन की स्थिति-विद्यार्थी जीवन भावी जीवन की आधारशिला है। इस काल में मनुष्य जो कुछ सीखता है, वह आजीवन उसके काम आता है। विद्यार्थी जीवन मनुष्य के जीवन की ऐसी विशिष्ट अवस्था है जिसमें उसे सही दिशा का बोध होता है।

विद्यार्थी जीवन में ज्ञानार्जन, विद्या तथा चरित्र का महत्व-विद्यार्थी का उद्देश्य मात्र विद्या प्राप्त करना ही नहीं होता है, वरन् ज्ञान की वृद्धि, शारीरिक-मानसिक विकास एवं चारित्रिक सद्गुणों की वृद्धि भी उसका लक्ष्य होता है। विद्याध्ययन काल ही वह काल है जिसमें सहयोग, प्रेम, सत्यभाषण, सहानुभूति, साहस, आदि गुणों का विकास किया जाता है। अनुशासन, शिष्टाचार आदि प्रवृत्तियाँ इसी समय जन्म लेती हैं। विद्यार्थी जीवन में विद्यार्थी ज्ञानार्जन करता है। विद्यार्थी अपने जीवन में महापुरुषों के चरित्र व उनके अनुभवों का अनुसरण करता है।

विद्यार्थी जीवन में विद्या के साथ-साथ चरित्र का विकास भी महत्वपूर्ण है। विद्यार्थी जीवन में चरित्र निर्माण पर विशेष बल दिया जाना चाहिए।

विद्यार्थी के आवश्यक गुण- विद्यार्थी में ये सभी गुण होते हैं जो एक तपस्वी में होने चाहिए। विद्यार्थी जीवन भी एक तपस्या के समान है। एकाग्रता विद्यार्थी जीवन का प्रमुख गुण है, यदि उसमें यह गुण निहित है तो उसमें अन्य गुणों का विकास स्वतः ही हो जाएगा। आदर्श विद्यार्थी को कौए जैसा दूर दृष्टि वाला, बगुले जैसा एकाग्रचित वाला और कुत्ते जैसी हल्की नींद वाला होना चाहिए।

''काक चेष्टा, बको ध्यानं, श्वान निद्रा तथैव च।
अल्पाहारी, गृहत्यागी, विद्यार्थिनो पंच लक्षणम्॥

आज का विद्यार्थी-प्राचीनकाल में विद्यार्थी अपने परिवार से दूर आश्रम में रहता था। वहाँ विद्याध्ययन के साथ-साथ आश्रम के संपूर्ण कार्य भी करता था। आज का विद्यार्थी नगरों एवं महानगरों के विलास भरे और प्रदूषित वातावरण में रहता है। आज का विद्यार्थी तो पैसे के बल पर, मात्र पैसे के लिए ही विद्याध्ययन कर

रहा है। विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता और स्वच्छंदता की प्रवृति बढ़ रही है। पश्चिमी सभ्यता से प्रभावित आज का विद्यार्थी जीवन की वास्तविकता से दूर भागता हुआ भारतीय संस्कृति और सभ्यता का उपहास करता नजर आ रहा है।

विद्यार्थी के कर्तव्य-विद्यार्थी का सर्वप्रथम कर्तव्य तो अपने प्रति है। यदि वह त्यागी और तपस्वी बनकर अपने प्रति कर्तव्य का निर्वाह नहीं कर रहा है तो समाज और राष्ट्र के प्रति भी कर्तव्य का निर्वाह नहीं कर सकता है। देश की स्वतंत्रता की रक्षा करना प्रत्येक विद्यार्थी का कर्तव्य है।

उपसंहार-विद्यार्थी जीवन हमारे जीवन का सबसे महत्वपूर्ण काल होता है। इस अवधि में उसकी स्थिति एक कच्ची मिट्टी के समान होती है। इस समय में ही उस मिट्टी को विकृत होने से रोका जा सकता है। इस समय उस मिट्टी को ऐसे साँचे में ढालना चाहिए, जिस तरह एक कुम्हार कच्ची मिट्टी को बर्तन में बदलकर सुंदर आकार प्रदान करता है, उसी प्रकार विद्यार्थी देश के भावी कर्णधार हैं, इन्हीं के ऊपर देश का भविष्य निर्भर है। **[10]**

(ग) नारी शिक्षा-

प्रस्तावना-भारतीय समाज में नारी को अनेक दृष्टियों से सम्मानजनक स्थान दिया गया है। फिर भी भारतीय नारी की स्थिति अत्यंत दयनीय ही रही है। पुरुषों ने नारियों को उनके अधिकारों से वंचित रखा तथा उन पर अत्याचार किए हैं। आधुनिक युग में नारी अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो गई है। उसमें नारी चेतना का प्रादुर्भाव हुआ है। देश के अनेक समाज सुधारकों, वर्तमान सरकारों, कुछ साहसी महिलाओं के नियोजित एवं संगठित प्रयासों के फलस्वरूप नारियों की दशा में कुछ सुधार संभव हो सके हैं। नारियों को शिक्षा देकर उनके भविष्य को सुधारा जा सकता है। फलस्वरूप हर गाँव, हर शहर में नारी शिक्षा के प्रति लोगों में उत्साह है और उनके द्वारा इस क्षेत्र में सहयोग दिया जा रहा है। शिक्षित नारी ही अपने परिवार को सूझबूझ से ठीक तरह से चला सकती है और अपनी संतान को शिक्षा दे सकती है।

समाज में नारी का महत्व-भारतीय समाज में नारी को उच्च स्थान प्रदान किया गया है। उसे देवी के रूप में मानते हुए यहाँ तक कहा गया है कि-**''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता:''** अर्थात जहाँ नारी की पूजा होती है वहीं देवताओं का वास होता है। संतान का पालन-पोषण करने, अपने त्याग, धैर्य, परिश्रम, प्रेम, स्नेह, ममता एवं हर प्रकार से घर के वातावरण को जीवंत एवं प्रगतिशील बनाने की दिशा में नारी का विशेष महत्व होता है। एक माँ, पत्नी व पुत्री के रूप में वह अनेक दायित्वों का निर्वाह करती है।

नारी की स्थिति-प्राचीन समय में नारी का स्थान बहुत ही सम्मानीय था। स्त्री के बिना कोई भी यश अपूर्ण माना जाता था। उन्हें शिक्षा प्राप्ति, शास्त्रार्थ और अपने विभिन्न कौशलों का विकास करने की स्वतंत्रता प्राप्त थी। सीता, सावित्री, शकुंतला, गार्गी आदि श्रेष्ठ नारियाँ इसी काल से संबधित हैं। मध्यकाल में नारी की स्थिति दयनीय हो गई। अशिक्षा, बाल-विवाह, सती-प्रथा आदि अनेक कुरीतियों के फलस्वरूप नारी का जीवन नरकमय बनता चला गया।

नारी जागरण एवं नारी शिक्षा-आज की नारी अपने अधिकारों के प्रति जागरूक है। अनेक समाज सुधारकों ने नारी के उत्थान हेतु उल्लेखनीय प्रयास किए हैं। राजा राममोहन राय ने सती प्रथा का अंत कराया। दयानंद सरस्वती ने शिक्षित महिलाओं को समान अधिकार देने की आवाज उठाई। आर्य समाज ने स्त्रियों को शिक्षित करने पर विशेष बल दिया। महात्मा गांधी ने भी आजीवन महिला उत्थान का कार्य किया। फलस्वरूप लोगों की मानसिकता में परिवर्तन हुआ। स्वतंत्रता के बाद भारतीय समाज में नारी को भी समान अधिकार प्रदान किए गए। नारी जागरण हेतु पुरुषों व महिलाओं द्वारा अनेक आंदोलन भी संचालित किए गए। इसका परिणाम यह हुआ कि समाज में नारी चेतना का विकास हुआ और उन्हें विद्यालयों में पढ़ने व नौकरी करने के लिए घर की चारदीवारी से बाहर निकाला जाने लगा।

उपसंहार-अनेक त्रासदियाँ, तनाव, कुंठाएँ और अत्याचार सहने के उपरांत आज नारी की स्थिति में बहुत परिवर्तन हुआ है। उसे अनेक अधिकार स्वतंत्रताएँ और अवसर प्राप्त हुए हैं। अभी भी पुरुषों को अपनी मानसिकता में कुछ और परिवर्तन करने की आवश्यकता है। साथ ही नारी को भी अपने महत्व व गौरव के अनुकूल ही आचरण करने की आवश्यकता है। **[10]**

12.

प्रारूप/औपचारिकताएँ	[1]
विषय सामग्री	[3]
भाषा	[1]
(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016)	**[5]**

व्याख्यात्मक हल **संपादक को पत्र**

सेवा में,
संपादक महोदय,
नवभारत टाइम्स,
नई दिल्ली

विषय-खोए हुए रुपयों की वापसी

मान्यवर,

मैं आपके सम्मानित तथा बहुप्रचारित दैनिक पत्र के माध्यम से अवगत कराना चाहता हूँ कि नोएडा सिटी सेंटर की जाँच मशीन पर एक यात्री के भूलवश एक लाख बीस हजार रुपये छूट गए। मैं रेलवे मैट्रो स्टेशन पर खड़ा हुआ यह सब देख रहा था। मैट्रो पुलिस ने उस व्यक्ति को बुलाकर उसके सारे रुपये वापस कर दिए तथा उस व्यक्ति ने पुलिस वालों को साभार धन्यवाद दिया। आजकल इस समाज में ऐसे ईमानदार व्यक्ति कहाँ हैं? क्योंकि इतनी बड़ी रकम खोने के बाद प्राप्त होना ही आश्चर्य की बात है। उस व्यक्ति ने इनाम के तौर पर पुलिस वालों को कुछ रुपये पुरस्कार स्वरूप देना चाहे लेकिन उन्होंने नहीं लिया और कहा कि यह तो हमारा कर्तव्य था। ऐसे व्यक्तियों को समाज में सम्मानित करना चाहिए जो अपना कार्य तथा कर्तव्य ईमानदारी से निर्वहन करते हैं।

सधन्यवाद !

भवदीय

सत्य प्रकाश श्रीवास्तव

दिनांक-..... **[5]**

अथवा

श्याम प्रकाश,

कलाकुंज, आगरा।

दिनांक-.....

प्रिय मित्र नरेश

नमो नमः।

आपके साथ विदेश यात्रा पर गमन करना बहुत ही अच्छा लगा। मेरे लिए अकेले जाना संभव नहीं था। आपने प्रस्थान से लेकर विदेश में रुकने की व्यवस्था, खान-पान व्यवस्था, रमणीय स्थलों को देखना तथा लौटने की समुचित व्यवस्था उचित प्रकार से की। एतदर्थ मैं हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ। ईश्वर आपको बल-बुद्धि और शक्ति प्रदान करें। आपके माता-पिता को सादर चरण-स्पर्श तथा छोटे भाई को सस्नेह प्यार।

आपका अभिन्न मित्र

श्याम प्रकाश। **[5]**

13.

आवश्यकता है

टीचर्स/शिक्षक

आनंद मैमोरियल इंटर कॉलेज जवाहर नगर लोनी रोड, लोनी (गाजियाबाद) पी. जी. टी. हिंदी, संस्कृत, नागरिक शास्त्र, भूगोल, रसायनशास्त्र, संगीत, कंप्यूटर विज्ञान हेतु अनुभवी अध्यापक/अध्यापिकाओं की। 15.07.20... को प्रातः 10 बजे विद्यालय में समस्त प्रमाणपत्रों सहित मिलें। मोबाइल नंबर-9837065.....

[5]

अथवा

सेल **सेल** **सेल**

श्याम क्लॉथ हाउस

- 100% ऊनी वस्त्र
- उचित मूल्य पर
- 50% छूट
- सुंदर व आकर्षक डिजाइन
- सभी वर्ग के लोगों के लिए

सर्दियों के कपड़ों की शानदार सेल

जल्दी कीजिए ऑफर सिर्फ सीमित समय के लिए

संपर्क करें: श्याम क्लॉथ हाउस, श्याम टावर, दुकान सं. 6-7, संजय प्लेस, आगरा।
फोन नंबर-0562 252565....

[5]

● ●

हिंदी 'अ'

प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र

उत्तरमाला

9

सी.बी.एस.ई., कक्षा X

खंड 'क' अपठित बोध 10

1. (क) न्यूज़ चैनल पर धरहरा स्तंभ को भरभराकर गिरते देखकर लेखक दु:खी व हताश था क्योंकि लेखक धरहरा में मिले फेरी लगाकर सामान बेचने वालों, मधुर बाँसुरी वादक और पर्यटकों के बारे में चिंतित था। उस घटना को देखकर सोचने लगा कि काश! सब ठीक हो। **[2]**

(ख) काठमांडू से लौटते समय लेखक ने रास्ते में हिमाच्छादित चोटियाँ, छोटे-छोटे नगर गाँव और कस्बे देखे, घरों के बाहर कटी हुई मक्का की फसल के गुच्छे खूंटियों पर लटके देखे तथा राह में काली नदी बहती दिखाई दी। **[2]**

(ग) नेपाल एक पर्वतीय इलाका है तथा वहाँ पर्वतों पर पर्याप्त जमीन नहीं होने से रोजगार के साधन कम होते हैं, जिसके कारण पुरुष नीचे मैदानी भागों में रोजगार के लिए जाते हैं और घर-परिवार की सारी ज़िम्मेदारी महिलाएँ उठाती हैं। गाँव की महिलाएँ खेती तथा शहरी महिलाएँ व्यवसाय सँभालती हैं इसलिए औरतें ही नेपाली अर्थव्यवस्था का आधार हैं। **[2]**

(घ) लेखक ने काठमांडू के बारे में बताया कि वहाँ के पहाड़ी खेतों में मक्का और अरहर की फसलें लहरा रही थीं तथा वहाँ के छोटे-छोटे गाँव और परकोटे वाले घर अत्यधिक सुन्दर लग रहे थे। **[2]**

(ङ) नेपाल में आए भूकंप की याद हो आने के कारण काठमांडू पर लिखने के लिए लेखक की अँगुलियाँ काँप रही थीं। **[1]**

(च) काठमांडू के बाज़ारों में इलेक्ट्रॉनिक सामानों की भरमार थी। दुकानों की मालकिनें मुस्तैदी से सामान बेच रही थीं। वहाँ की औरतें बड़ी कुशलता से व्यावसायिक दाँव-पेंच अपना रही थीं। **[1]**

खंड 'ख' व्यावहारिक व्याकरण 16

2. (क) ● कि अब बुढ़ापा आ गया है
● संज्ञा आश्रित उपवाक्य **[½ + ½ = 1]**

(ख) जब मॉरीशस की स्वच्छता देखी तो/तब मन प्रसन्न हो गया/ जब मॉरीशस की स्वच्छता देखी, मन प्रसन्न हो गया। **[1]**

(ग) गुरुदेव आराम कुर्सी पर लेटकर/ लेटे हुए प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद ले रहे थे। **[1]**

(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016)

(घ) पुजारी जी ने पूजा समाप्त की और घर चले गए। **[1]**

3. **(क)** दादाजी ने हम सबको पुस्तकें दीं। **[1]**

(ख) वह चल नहीं सकता/ पाता। **[1]**

(ग) उससे तो उठा भी नहीं जाता/ जा सकता। **[1]**

(घ) उनके द्‌वारा उछलकर डोर पकड़ ली गई। **[1]**

(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2018)

4. ● सही व्याकरणिक कोटि के लिए 1/2 अंक दें।

● व्याकरणिक कोटि सही होने पर ही अन्य किसी एक बिंदु के लिए 1/2 अंक दें।

(*i*) **(क)** <u>गाँव की-</u> संज्ञा (जातिवाचक), पुल्लिंग, एकवचन, संबंध कारक **[½ + ½ = 1]**

(ख) <u>मिट्‌टी</u>- संज्ञा (जातिवाचक), स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्म कारक **[½ + ½ = 1]**

(ग) <u>मैं</u>- सर्वनाम (उत्तम पुरुषवाचक), पुल्लिंग, एकवचन, कर्ता कारक। **[½ + ½ = 1]**

(घ) <u>तरस गया</u>- क्रिया (अकर्मक), पुल्लिंग, एकवचन, भूतकाल, कर्तृवाव्य, 'तरस' मुख्य क्रिया, 'गया' रंजक क्रिया

अथवा

<u>तरस</u>- क्रिया (अकर्मक), पुल्लिंग, एकवचन, भूतकाल

<u>गया</u>- क्रिया (अकर्मक), पुल्लिंग, एकवचन, भूतकाल **[½ + ½ = 1]**

(व्याकरणिक कोटि (भेद सहित) तथा अन्य में से किसी एक बिंदु का उल्लेख आपेक्षित)

(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2018)

5. **(क)** रौद्र रस **[1]**

(ख) उदाहरण-विन्ध्य के वासी, उदासी, तपो व्रतधारी महा बिनु नारि दु:खारे।
गौतम तीय तरी तुलसी सो कथा सुनि भे मुनिवृंद सुखारे।।
(उपयुक्त उदाहरण पर पूरे अंक दिए जाएँ।) **[1]**

(ग) रति। **[1]**

(घ) वीर रस। **[1]**

(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016)

खंड 'ग' पाठ्यपुस्तक तथा पूरक पाठ्यपुस्तक 34

6. **(क)** ● बिस्मिल्ला खाँ विश्व प्रसिद्‌ध शहनाई वादक थे।

● बालाजी मंदिर वे प्रतिदिन रियाज़ के लिए जाते थे। **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016) [1 + 1 = 2]**

व्याख्यात्मक हल-बिस्मिल्ला खाँ विश्व प्रसिद्‌ध एवं कर्मठ शहनाई वादक थे जिनका अनुसरण किया जाता है। वे प्रतिदिन बालाजी मंदिर में शहनाई के रियाज़ के लिए जाते थे।

(ख) ● रसूलन और बतूलन बाई का गाना सुनकर खाँ साहब को खुशी मिलती थी।

● उन्हें वहाँ कभी ठुमरी, कभी टप्पे, कभी दादरा अलग-अलग प्रकार के बोल-बनाव सुनने को मिलते थे।

(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2018) [1 + 1 = 2]

व्याख्यात्मक हल–बिस्मिल्ला खाँ प्रतिदिन बालाजी के प्रसिद्ध मंदिर में रियाज़ के लिए उस रास्ते से जाते थे, जिस पर रसूलनबाई और बतूलनबाई का घर था। इस रास्ते में जाते समय बिस्मिल्ला खाँ को इन दोनों बहनों का गायन ठुमरी, कभी टप्पे, कभी दादरा अलग-अलग सुनने का अवसर मिलता था। इसी कारण उनको इस रास्ते से मंदिर जाना अच्छा लगता था।

(ग) शहनाई वादन का अभ्यास। **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2018) [1 + 1 = 2]**

व्याख्यात्मक हल–रियाज शब्द का तात्पर्य है – शहनाई बजाने का अभ्यास करना। निरंतर अभ्यास करने से परिपक्वता एवं पूर्णता का समावेश होता है।

7. **(क)** आधुनिक विचारधारा, समाज-सेवा, देश के लिए कार्य करना, संवेदनशीलता, शिक्षा और प्रतिभा विकास के अवसर देना। (कोई दो बिंदु अपेक्षित) **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2018) [1 + 1 = 2]**

व्याख्यात्मक हल–मन्नू भंडारी के पिता की अनेक अनुकरणीय विशेषताएँ हैं। उनके पिता आधुनिक विचारधारा के थे तथा वे समाज सुधार के अनेक कार्यों से जुड़े हुए थे। समाज तथा देश के कार्यों से जुड़े होने के कारण अनुकरणीय थे। वे आठ-आठ, दस-दस विद्यार्थियों की पढ़ाई में भी भरपूर मदद किया करते थे। वे अत्यंत कोमल तथा संवेदनशील थे।

(ख) अंतिम संस्कार का अधिकार केवल पुरुषों को ही होना
विधवा-पुनर्विवाह का प्रचलन न होना
मृत्यु पर शोक मनाना
(किन्हीं दो बिंदुओं का उल्लेख अपेक्षित) **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2018) [1 + 1 = 2]**

व्याख्यात्मक हल–बालगोबिन भगत प्रचलित सामाजिक रूढ़ियों के विरुद्ध थे इसलिए आँगन में पुत्र के शव रखे रहने पर भी ज़मीन पर आसन लगाए गीत गाए जा रहे थे। पतोहू रो रही है जिसे गाँव की स्त्रियाँ चुप करने की कोशिश कर रही हैं। वे पतोहू को रोने के बदले उत्सव मनाने को कहते हैं।

(ग) बाबा विश्वनाथ और बिस्मिल्ला खाँ दोनों ही काशी की विशिष्ट पहचान और गंगा-जमुनी संस्कृति के अभिन्न अंग हैं।
यह पंक्ति काशी में धार्मिक सद्भावना, आपसी भाईचारे की भावना को प्रकट करती है।
(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2018) [1 + 1 = 2]

व्याख्यात्मक हल–बाबा विश्वनाथ और बिस्मिल्ला खाँ दोनों ही काशी की विशिष्ट पहचान हैं। बिस्मिल्ला खाँ का काशी के प्रति पुश्तैनी संबंध हैं क्योंकि उनके पूर्वज काशी में रचे-बसे थे। उन्होंने काशी के विश्वनाथ मंदिर और बालाजी की ड्योढ़ियों में शहनाई बजाई थी। बचपन से ही वे गंगा को मैया कहते आए थे।

(घ) फादर बुल्के का भारतीय संस्कृति और सभ्यता के प्रति सम्मान व संयास ग्रहण करने की इच्छा और भारत की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के कारण ऐसा संभव हुआ। **[2]**

(ङ) (*i*) लेखक ने जैसे ही ट्रेन के सेकेंड क्लास के डिब्बे में प्रवेश किया, वहाँ उसने बर्थ पर पालथी मारकर बैठे हुए एक नवाब साहब को देखा, लेखक को देखते ही उनकी आँखों में असंतोष का भाव आ गया।

(*ii*) नवाब साहब बिना बातचीत किए कुछ देर तक गाड़ी की खिड़की से बाहर देखते रहे। नवाब साहब के इन हाव-भावों से लेखक ने महसूस किया कि वे उनसे बातचीत करने के लिए तनिक भी उत्सुक नहीं हैं। **[2]**

8. (क) श्रीकृष्ण को जिस प्रकार हारिल पक्षी पैरों में पकड़ी लकड़ी को एकमात्र आधार मानता है, उसी प्रकार श्रीकृष्ण गोपियों के एकमात्र आधार हैं। **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2018) [1 + 1 = 2]**

व्याख्यात्मक हल- प्रस्तुत अंश के अनुसार अभिव्यक्त हो रहा है कि गोपियों के लिए श्रीकृष्ण ही सर्वस्व हैं, वे ही जीवन के एकमात्र आधार हैं। श्रीकृष्ण ही हारिल पक्षी की तरह गोपियों के एक मात्र आश्रय हैं।

(ख) ● श्रीकृष्ण और अस्थिर मन वालों की ओर।
● इन्हीं को मन की स्थिरता के लिए योग की आवश्यकता है। **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2018) [1 + 1 = 2]**

व्याख्यात्मक हल-प्रस्तुत पंक्ति में श्री कृष्ण व अस्थिर मन वालों की ओर संकेत किया गया है। सूरदास का कथन है कि हमारा मन तो श्रीकृष्ण के प्रति संलग्न है, उन्हीं की सेवा में हमारा मन लगा हुआ है, उन्हीं को समर्पित है।

(ग) ● कड़वी ककड़ी और अनदेखे-अनसुने रोग की तरह।
● क्योंकि गोपियाँ श्रीकृष्ण से एकनिष्ठ प्रेम करती हैं। कृष्ण के अतिरिक्त उन्हें सब कुछ अरुचिकर लगता है।
(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2018) [2]

9. (क) समाज में उत्साह और क्रांति की चेतना जागृत करने के लिए ताकि नवपरिवर्तन आ सके। **[2]**
(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2018)

व्याख्यात्मक हल- कवि बादलों से प्रार्थना करता है, क्योंकि उसे धरती की तपन बुझानी है। कवि के अनुसार पृथ्वी पर रहने वाले लोगों ने अत्यधिक कष्टों का सामना किया है, वे गर्मी के कारण प्यासे हैं। वह बादलों के बरसने से धरती की प्यास बुझाकर उसे शीतल करना चाहता है। इसलिए कवि बादलों की गर्जना का आह्वान करता है।

(ख) ● दहेज प्रथा
● कन्या को दान की वस्तु समझना
● स्त्रियों का शोषण करना
● कम उम्र में विवाह
(किन्हीं दो का उल्लेख अपेक्षित) **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2018) [1 + 1 = 2]**

व्याख्यात्मक हल- दहेज के लालच में लड़की को प्रताड़ना देना, हत्या या आत्महत्या के लिए प्रेरित करना। उसे कमजोर समझकर मान-सम्मान न देना आदि सामाजिक कुरीतियाँ हैं।

(ग) संगतकार योग्य होते हुए भी जानबूझकर अपनी आवाज़ को नीचा रखता है और अपनी भूमिका को मुख्य गायक का सहयोग करने तक ही सीमित रखता है। **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2018) [2]**

व्याख्यात्मक हल- संगतकार अपनी आवाज़ को पूरी खोलकर नहीं गाता, क्योंकि वह यह नहीं चाहता कि मुख्य गायक के सामने उसकी आवाज तेज हो जाए। उसे मालूम है कि यदि उसकी आवाज तेज होगी तो मुख्य गायक की आवाज़ का महत्व कम हो जाएगा। मुख्य गायक के प्रति उसके मन में श्रद्धा भी है, इसलिए उसकी आवाज में एक हिचक-सी प्रतीत होती है।

(घ) वीर, क्रोधी, बाल-ब्रह्मचारी, अहंकारी, क्षत्रिय कुल के विरोधी, कठोर वाणी। **[2]**
(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016)

व्याख्यात्मक हल- परशुराम वीर योद्धा, क्रोधी, बाल ब्रह्मचारी, अहंकारी तथा क्षत्रिय कुल के विरोधी हैं। उनकी वाणी में कठोरता है। शिव-धनुष तोड़ने पर वे लक्ष्मण को फरसा दिखाकर डराते हैं। वे क्षत्रियों के प्रबल विरोधी हैं।

(ङ) बच्चे की मुस्कान में निश्छलता और मासूमियत होती है, उनके दिल में किसी के लिए दुर्भावना नहीं होती, जबकि बड़े व्यक्ति की मुस्कान में चालाकी, स्वार्थ व किसी के प्रति दुर्भावना भी छिपी हो सकती है। **[2]**

10. (क) भोलानाथ अपने पिता के साथ चौके पर खाने बैठता था। पिताजी उसे बड़े स्नेह के साथ गोरस और भात सानकर खिलाते थे। भोलानाथ थोड़ा खाकर अफर जाता तो माता थोड़ा और खिलाने के लिए हठ करती थीं। वह बाबू जी से कहने लगती-आप तो चार-चार दाने के कौर बच्चे के मुँह में देते जाते हैं, इससे वह थोड़ा खाने पर भी समझता है कि बहुत खा लिया, आप खिलाने का ढंग नहीं जानते, बच्चे को भर-मुँह कौर खिलाना चाहिए। इसके बाद वह थाली में दही-भात सानकर तोता, मैना, कबूतर, हंस, मोर आदि के बनावटी नाम से कौर बनाकर यह कहते हुए खिलाती जाती कि जल्दी खा लो, नहीं तो वह उड़ जाएँगे। इस प्रकार माँ के खेल-खेल में खिलाने पर भोलानाथ हँसते-हँसते खाना खा लेता था। **[3]**

(ख) आज की पत्रकारिता में नवीन व्यक्तित्व के गुणों का विशेषकर वर्णन किया जाने लगा है। चर्चित हस्तियाँ क्या-क्या पहनती हैं और कैसा-कैसा खान-पान करती हैं। इस तरह की पत्रकारिता से आम जनता तथा युवा पीढ़ी प्रभावित होने लगती है। यदि खास व्यक्ति का चरित्र अच्छा है तब तो यह अच्छी बात है और ग्राह्य भी है अन्यथा विपरीत स्थितियों में समाज का संतुलन बिगड़ने और आदर्शों को नुकसान पहुँचने का डर रहता है। इस तरह की पत्रकारिता युवा पीढ़ी को भ्रमित एवं कुंठित करती है। युवा पीढ़ी देश की रीढ़ है, उसके कमजोर होने से देश का विकास बाधित होता है। पत्र-पत्रिकाओं को पढ़कर युवा चर्चित हस्तियों के खान-पान एवं पहनावे को अपनाने पर मजबूर हो जाता है। अपनी इन इच्छाओं की पूर्ति के लिए आज की युवा पीढ़ी उचित-अनुचित मार्ग अपनाने से भी संकोच नहीं करती जिससे दिखावा, बनावटीपन और हिंसा आदि को बढ़ावा मिलता है। **[3]**

(ग) पर्वतीय स्थलों पर बढ़ती व्यवसायिक गतिविधियों का इन स्थलों व प्रकृति पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है। प्रदूषण दिनों दिन बढ़ रहा है, व प्रकृति में असंतुलन बढ़ रहा है। पर्वतीय स्थलों पर घूमने आने वाले पर्यटक वहाँ पर अपने साथ ले जाए गए सामान कूड़ा-करकट, पानी की बोतलें, बचा हुआ भोज्य पदार्थ आदि वहीं छोड़ आते हैं जिसके कारण वहाँ की स्वच्छता और प्राकृतिक सौंदर्य तो नष्ट होता ही है साथ ही साथ प्रदूषण भी बढ़ता है इसलिए इन सबको रोकने हेतु जागरुकता अभियान चलाए जाने चाहिए, सैलानियों द्वारा की जाने वाली विभिन्न प्रकार की गतिविधियों को नियंत्रित किया जाना चाहिए तथा उन्हें पहाड़ों के सौंदर्य को बनाए रखने हेतु वहाँ की स्वच्छता के लिए भी उन्हें प्रेरित किया जाना चाहिए साथ ही साथ सरकार द्वारा भी कठोर कदम उठाए जाने चाहिए जिनसे इनके प्राकृतिक सौंदर्य को बचाया जा सके। **[3]**

खंड 'घ' लेखन 20

11. (क) पर्यावरण प्रदूषण

प्रस्तावना- आज सर्वाधिक चिंता का विषय है- पर्यावरण प्रदूषित होना। पृथ्वी पर हानिकारक गैसों का अनुपात बढ़ रहा है, ओजोन परत में छेद हो गया है जिससे हानिकारक अल्ट्रावायलेट किरणें पृथ्वी के वातावरण में प्रविष्ट हो रही हैं। प्राकृतिक आपदाएँ निरंतर बढ़ रही हैं और अगर यही स्थिति रही तो पृथ्वी नष्ट हो जाएगी। विश्व का सभ्य समाज पृथ्वी को इस प्रदूषण से बचाने के लिए यदि प्रयास नहीं करता तो भविष्य हमें कभी माफ नहीं करेगा।

प्रदूषण का अर्थ- जीवन के लिए संतुलित वातावरण नितांत आवश्यक है। वातावरण के घटकों में जब असंतुलन पैदा हो जाता है तो उसे प्रदूषण कहा जाता है। प्रदूषित वातावरण में किसी जीवधारी का जीवित रह पाना कठिन है अतः हमें प्रदूषण से मुक्ति पानी ही होगी।

प्रदूषण के प्रकार- सामान्यत: प्रदूषण पाँच प्रकार का होता है- 1. वायु प्रदूषण, 2. जल प्रदूषण, 3. मृदा प्रदूषण, 4. ध्वनि प्रदूषण, 5. रेडियोएक्टिव प्रदूषण।

प्रकृति मानव की सहचरी है। मानव का उसके साथ प्राचीन काल से घनिष्ठ संबंध रहा है। वह उसकी गोद में पला, उसके आँगन में खेला है। इसलिए प्रकृति के प्रति उसका बहुत आकर्षण है। प्रकृति सुंदरी अपने अनेक रूपों में मानव-हृदय को उल्लासित करती है। प्रकृति की शोभा हृदयहारिणी और मनोहर होती है, परंतु प्रकृति का यह सौंदर्य नित्य प्रति तिरोहित होता जा रहा है। आज मनुष्य दूषित वातावरण में विचरण करते हुए घुटन का अनुभव कर रहा है। आज सारा वातावरण पर्यावरण प्रदूषण से ग्रस्त है। विश्व के सभी देशों को पर्यावरण प्रदूषण की इस समस्या से गंभीर खतरा उत्पन्न हो गया है।

प्रदूषण के कारण- निश्चय ही पर्यावरण को विकृत और दूषित करने वाली समस्त विपदाएँ हमारी अपनी ही लायी हुई हैं। हम स्वयं ही प्रकृति का संतुलन बिगाड़ रहे हैं। इसी असंतुलन से भूमि, वायु, जल और ध्वनि के प्रदूषण उत्पन्न होते हैं। पर्यावरण प्रदूषण से फेफड़ों के रोग, हृदय और पेट की बीमारियाँ, देखने व सुनने की क्षमता में कमी तथा मानसिक तनाव आदि बीमारियाँ हो रही हैं। बढ़ती जनसंख्या की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए धरती के संचित संसाधनों को अंधाधुंध बेरहमी से निचोड़ा जा रहा है। बड़े पैमाने पर वन जंगल काटे जा रहे हैं क्योंकि खेती करने, घर बनाने, कल-कारखाने लगाने, सड़कें और रेल की पटरियाँ बिछाने के लिए भूमि चाहिए।

प्रदूषण रोकने के उपाय- सिंचाई और बिजली की आपूर्ति करने के लिए नदियों और झरनों के स्वाभाविक प्रवाहों को मोड़कर और रोककर बड़े-बड़े बाँध बनाए जाते हैं जिससे जंगल जलमग्न होते हैं। दूसरी ओर रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशक दवाईयों के छिड़काव ने भूमि को दूषित और विषैली बना दिया गया। जिसके परिणामस्वरूप स्वच्छ शुद्ध अनाज व फल, सब्जियाँ दुर्लभ हो गईं। वैज्ञानिक आविष्कारों और बढ़ते हुए औद्योगिकीकरण के फलस्वरूप प्राण वायु सर्वाधिक दूषित और विषैली हो चली है। बेशुमार धुआँ उगलते कल-कारखाने, व सड़कों पर पेट्रोल और डीजल का विशाल धुआँ सारे पर्यावरण को रोगी, विषैला व निर्जीव बना रहा है। कल-कारखानों से निकलने वाले कचरे के ढेर नदी, नालों और जलाशयों के जल को प्रदूषित और जहरीला बना रहे हैं। कचरे के बचे-खुचे ढेर से खुली भूमि पर सड़ते हुए जहरीले रसायनों और उनसे निकलने वाली विषैली गैसों से हवा, पानी और मिट्टी प्रदूषित हो रही है। लगातार दौड़ती हुई बसों, रेलगाड़ियों, मोटरकारों और स्कूटरों का निरंतर बढ़ता उमड़ता हुआ भारी शोर, कल कारखानों की, मशीनों की आवाज़ें हमारे कान फोड़ रही हैं।

उपसंहार-हमें प्रदूषण से हर हाल में मुक्ति पानी है। अधिकाधिक वृक्षारोपण करके, नदियों में कचरा न बहाकर, कम-से-कम रासायनिक खाद का प्रयोग करके, वाहनों का सीमित प्रयोग करके और परमाणु हथियार विहीन विश्व करके ही हम प्रदूषण से मुक्ति पा सकते हैं। **[10]**

(ख) अनुशासन की समस्या

प्रस्तावना- राष्ट्र का निर्माण अनुशासन के ही माध्यम से संभव है। पूर्व समय में राजा-महाराजा अपने बच्चों को गुरुकुल शिक्षा दिलाने के लिए गुरुओं के आश्रम में इसलिए भेंजते थे ताकि उनके बच्चे अनुशासन में रहकर सुसंस्कृत चरित्रवान बनें तथा कठोर परिश्रम कर सकें। विद्यार्थियों के शारीरिक एवं नैतिक विकास के लिए आश्रम के गुरुओं ने कठोर नियम बनाए थे। लेकिन अब विचारों के परिवर्तन एवं समाज के विकास के साथ-साथ इस पद्धति में भारी परिवर्तन हुआ और अब डर, भय के स्थान पर प्रेम एवं सहानुभूतिपूर्वक अनुशासन की शिक्षा दी जाने लगी।

अनुशासन की परिभाषा एवं अर्थ- अनुशासन का अर्थ है-सामाजिक एवं व्यक्तिगत स्तर पर बड़ों के आदेशों का अनुसरण करना। पूर्व समय में शक्ति और भय के द्वारा किए गए नियंत्रण को अनुशासन समझा जाता था।

पाश्चात्य विद्वान 'प्लेटो' का मानना था:

"Discipline Must be Based on Love and Controlled by Love"

सच्चा अनुशासन वही है जिससे विद्यार्थी अपनी इच्छा से आदेशानुसार कार्य करे।

अनुशासन का महत्व- अनुशासन का हमारे जीवन में महत्व बहुत बड़ा है क्योंकि इसके अभाव में प्रकृति-प्रदत्त क्षमताओं का विकास रुक जाता है। सूर्य, चंद्रमा एवं संपूर्ण नक्षत्र मंडल एक अनुशासन में बंधे हैं। जब-जब प्रकृति ने अनुशासन तोड़ा है तो भूकंप, सूखा, महामारी जैसे प्रकोप मानव को झेलने पड़े हैं। इसीलिए हमारे समाज को चाहिए कि वह अनुशासित होकर प्रत्येक कार्य को समय पर करे जिससे हमारे देश के विकास चक्र में कोई रुकावट न आए।

अनुशासनहीनता के कारण- अनुशासनहीनता के अनेक कारण हो सकते हैं- (अ) दोषपूर्ण वर्तमान शिक्षा प्रणाली, (ब) शिक्षकों का पतन, (स) विद्यालयों में अनैतिक कार्य, (द) शिक्षा का व्यवहारिक व व्यावसायिक न होना, (य) अशिक्षित तथा अज्ञानी अभिभावक, (र) धार्मिक व नैतिक शिक्षा का अभाव आदि।

अनुशासनहीनता को दूर करने के उपाय- (अ) शिक्षा का गुणात्मक विकास, (ब) शिक्षा-व्यवस्था में सुधार, (स) परीक्षा-प्रणाली में सुधार, (द) शिक्षकों के आचरण में सुधार, (य) धार्मिक व नैतिक शिक्षा की व्यवस्था, (र) सृजनात्मक क्रियाएँ, (ल) राजनीतिक प्रतिबंध आदि उपायों से अनुशासनहीनता को दूर किया जा सकता है।

उपसंहार-जिस देश के नागरिक अनुशासित होंगे वह देश और उसका समाज निश्चय ही उन्नतिशील होगा। हमारे लिए गर्व की बात है कि हमारे देश की केंद्र सरकार तथा राज्य सरकारें अनुशासनहीनता जैसे प्रमुख विषयों को लेकर काफी गंभीर हैं तथा इस समस्या का निराकरण करने के लिए प्रयासरत हैं। **[10]**

(ग) बेरोजगारी की समस्या

प्रस्तावना-आज हमारे देश की समस्याओं में बेरोजगारी की समस्या भी प्रमुख है। आजकल पढ़े-लिखे युवक परेशान हैं। परंपरागत व्यवसाय छोड़ दिए जाने के कारण सभी नौकरी की खोज में दौड़ रहे हैं।

बेरोजगारी का अर्थ-बेरोजगारी उस स्थिति को कहते हैं जब कोई योग्य तथा काम करने के लिए इच्छुक व्यक्ति जीविका चलाने हेतु मजदूरी की सामान्य दरों पर कार्य माँगता हो फिर भी न मिल रहा हो।

विकट समस्या-भारत की आर्थिक समस्याओं में बेरोजगारी एक मुख्य समस्या है। यह एक ऐसी घातक समस्या है जिसके कारण मानव-शक्ति का ही ह्रास नहीं होता वरन देश का आर्थिक ढाँचा भी चरमरा जाता है।

एक अभिशाप-बेरोजगारी देश व मानव समाज के लिए एक अभिशाप है। यह अनेक ऐसी समस्याओं को जन्म देती है जो समाज के लिए कलंक बन जाती हैं। इससे एक ओर निर्धनता, भुखमरी तथा मानसिक अशांति फैलती है तो दूसरी ओर युवकों में आक्रोश व अनुशासनहीनता फैलती है। बेरोजगारी एक ऐसा विष है जो देश के आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक जीवन को दूषित कर देती है। अत: बेरोजगारी के कारणों की खोज करके उनका निराकरण नितांत आवश्यक है।

बेरोजगारी के कारण-बेरोजगारी के कुछ प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं:

(अ) जनसंख्या में वृद्धि-देश में जनसंख्या विस्फोट तीव्रगति से हुआ है। देश में प्रति वर्ष 2.4% की जनसंख्या वृद्धि हो जाती हैं जबकि इस दर से बेरोजगार व्यक्तियों के लिए रोजगार की व्यवस्था नहीं है।

(ब) दोषपूर्ण शिक्षा-प्रणाली-हमारे देश की शिक्षा-प्रणाली त्रुटिपूर्ण है। यह रोजगार प्रदान करने वाली नहीं है। इसमें पुस्तकीय ज्ञान तो भरपूर है किंतु व्यावहारिक ज्ञान शून्य है।

(स) कुटीर उद्योगों की उपेक्षा-हमारे देश में कुटीर उद्योगों के विकास की ओर ध्यान नहीं दिया जा रहा, जिसके फलस्वरूप अनेक कारीगर बेकार हो गए। अत: बेरोजगारी में निरंतर वृद्धि होती गई।

(द) औद्योगीकरण की मंद प्रक्रिया-विगत पंचवर्षीय योजनाओं में देश के औद्योगीकरण के लिए प्रशंसनीय कदम उठाए गए हैं, फिर भी समुचित रूप से इसका विकास नहीं हो सका है। अत: बेरोजगार व्यक्तियों के लिए वांछित मात्रा में रोजगार नहीं जुटाए जा सके हैं।

(य) कृषि का पिछड़ापन-हमारे देश की लगभग 58.4 प्रतिशत जनता कृषि पर निर्भर है। यहाँ की कृषि अत्यंत पिछड़ी हुई दशा में है।

समाधान-बेरोजगारी की समस्या का समाधान निम्न उपायों द्वारा किया जा सकता है- (अ) जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण (ब) शिक्षा-प्रणाली में व्यापक परिवर्तन करके (स) कुटीर उद्योगों के विकास के द्वारा (द) औद्योगिक विकास (य) सहकारी खेती (र) सहायक उद्योगों का विकास (ल) राष्ट्र-निर्माण के विविध कार्य (व) सामाजिक ढाँचे में परिवर्तन के द्वारा (श) रोजगार कार्यालयों का विस्तार (ष) प्राकृतिक संसाधनों का समुचित उपयोग करके आदि।

उपसंहार-हमारे देश की सरकार बेरोजगारी की समस्या के समाधान के लिए प्रयत्नशील है और उसने इस दिशा में अनेक महत्वपूर्ण कदम भी उठाए हैं। हमारे देश में जो कुछ संसाधन उपलब्ध हैं उनका उपयोग करके भी इसका समाधान खोजा जा सकता है। अतः बेरोजगारी की समस्या को दूर करके किसी भी देश का आर्थिक विकास किया जा सकता है। **[10]**

12. सेवा में,

थानाध्यक्ष महोदय,

सदर थाना, आगरा

विषय-क्षेत्र में बढ़ते अपराधों की रोकथाम के संबंध में।

महोदय,

इस पत्र के माध्यम से मैं आपका ध्यान सदर क्षेत्र में निरंतर बढ़ रहे अपराधों की ओर दिलाना चाहता हूँ। विगत एक माह से इस क्षेत्र में अपराध बढ़ रहे हैं। आए दिन घरों के ताले तोड़कर चोर घरों में घुसकर वारदातों को अंजाम दे रहे हैं। लुटेरों का दुस्साहस भी इतना बढ़ गया है कि राह चलती महिलाओं के गले से चेन खींचने की घटनाएँ भी आम बात हो गई है। बढ़ते अपराधों से महिलाएँ डर के कारण घर से अब आने जाने का भी साहस नहीं जुटा पाती हैं।

आपसे अनुरोध है कि हमारे क्षेत्र में पुलिस की गश्त बढ़ा दें व अपराधियों को पकड़ने की समुचित व्यवस्था का निर्देश संबंधित अधिकारियों को दें ताकि इस क्षेत्र के निवासी डर व असुरक्षा के घेरे से बाहर निकल कर सुख-शांति से रह सकें।

सधन्यवाद!

भवदीय

आर.के.मिश्रा

M-36 सदर बजार, आगरा

दिनांकः 3 मार्च 20..... **[5]**

अथवा

प्रिय मित्र अंकुर

सप्रेम नमस्कार

गत शनिवार मैं यहाँ सकुशल पहुँच गया पर कुछ थकान के कारण मैं तुम्हें पत्र न लिख सका। आज मैं इस पत्र के माध्यम से तुम्हें धन्यवाद देना चाहता हूँ कि तुमने मुझे शिमला के सभी दार्शनिक स्थलों को दिखाने में रुचि लेकर मेरी सहायता की। तुम्हारे जैसे सुसंस्कृत व समझदार मित्र का साथ मुझे अविस्मरणीय रहेगा। हम जैसे समतल प्रदेशों के निवासी पहाड़ों के प्राकृतिक सौंदर्य-अनुभव से वंचित रहते हैं। वास्तव में शिमला अद्भुत प्राकृतिक स्थल है। बर्फ से ढँकी हुई पहाड़ियों पर जब सूर्य की किरणें पड़ती थीं तब ऐसा प्रतीत होता था मानों चाँदी के पर्वतों पर प्रकृति ने सोना लुटा दिया है। मन अभी भी उसी आनंद में खोया हुआ है।

मैं एक बार फिर तुम्हारा आभारी हूँ जिसने मुझे प्रकृति के अद्‌भुत सौंदर्य से अवगत कराया। मेरी ओर से परिवार के सभी सदस्यों को यथायोग्य प्रणाम कहना।

सधन्यवाद

तुम्हारा मित्र

अ, ब, स, द

दिनांक

[5]

13.

आवश्यकता है

अखबार वितरण हेतु लड़कों की

पद संख्या	60 पद
नियुक्ति क्षेत्र	आपके गृह क्षेत्र में
योग्यता–	10 वीं पास
मानदेय–	₹ 4 से 6 हजार
संपर्क करें–	7876711.....

[5]

अथवा

सरस्वती ज्ञान मंदिर

बल्केश्वर, आगरा में

चित्र-प्रदर्शनी

दिनांक 26 जनवरी 20xx से 28 जनवरी 20xx तक

समय - प्रातः 10 बजे से 6 बजे सायं तक

उभरते बाल शिल्पियों द्‌वारा तैयार की गई हस्तकला की वस्तुओं की प्रदर्शनी 26 जनवरी 20xx से 28 जनवरी 20xx तक आयोजित की गई है। इच्छुक व्यक्ति प्रदर्शनी में से अपनी पसंदीदा वस्तु खरीद भी सकते हैं।

[5]

● ●

हिंदी 'अ'

प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र

उत्तरमाला

10

सी.बी.एस.ई., कक्षा X

खंड 'क' अपठित बोध 10

1. **(क)** चाणक्य के अनुसार विद्या, जप और दान ये तीन उपक्रम होते हैं। हमें इन तीनों पर कभी संतोष नहीं करना चाहिए। त्रिषु नैव कर्तव्यः विद्यायां तपदानयोः। **[2]**

(ख) संतोष का महत्व प्रतिपादित करते हुए कहा गया है कि हमें जो प्राप्त है उसी पर संतोष करना चाहिए। कहा भी गया है कि जब संतोष रूपी धन आता है तो अन्य सभी धनों का कोई मूल्य नहीं है। **[2]**

(ग) जब जीवन में संतोष रहे, शुद्ध सात्विक आचरण एवं शुचिता का भाव रहे, तब हमारे अंदर दया, उदारता, और आत्मीयता की गंगा बहने लगती है। **[2]**

(घ) जीवन में संतोष, शुद्ध सात्विक आचरण और शुचिता का भाव रहा तो हमारे मन के सभी विकार दूर हो जाएँगे और हमारे अंदर सत्य, निष्ठा, प्रेम, उदारता, दया और आत्मीयता की गंगा बहने लगेगी। **[2]**

(ङ) संत्रास, कुंठा और असंतोष को। **[1]**

(च) संतोष का महत्व। **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016)** **[1]**

खंड 'ख' व्यावहारिक व्याकरण 16

2. **(क)** कब्रिस्तान की ज़मीन के किनारे पर दो-चार घर बने थे। **[1]**

(ख) सरल वाक्य। **[1]**

(ग) हम सभी बगीचे में घूमे और छात्रावास की ओर चल पड़े। **[1]**

(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016)

(घ) आलसी मोहिनी ने झाड़ी साफ कर पेड़ से फल तोड़े। **[1]**

3. **(क)** हिंदी के बारे में अध्यापक ने क्या कहा? **[1]**

(ख) आज मिलकर कहीं चलें/ चलते हैं। **[1]**

(ग) कृतिका से देर तक नहीं सोया जाता। **[1]**

(घ) अनेक पाठकों के द्वारा पुस्तक की सराहना की गई। **[1]**

(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016)

4. **(क)** जहाँ तक- स्थानवाचक क्रियाविशेषण, 'हो चुका है' क्रिया का विशेषण। **[½ + ½ = 1]**

(ख) कुछ- परिमाणवाचक विशेषण, स्त्रीलिंग, एकवचन, 'ज़मीन' की विशेषता। **[½ + ½ = 1]**

(ग) हमें- पुरुषवाचक सर्वनाम, पुल्लिंग/स्त्रीलिंग, बहुवचन, कर्मकारक। **[½ + ½ = 1]**

(घ) हमारी-सार्वजनिक विशेषण, एकवचन, स्त्रीलिंग, विशेष्य - भावना **[½ + ½ = 1]**

5. **(क)** स्थायी भाव उत्पन्न होकर नष्ट नहीं होते, संचारी भाव पानी के बुलबुलों की भाँति बनते-मिटते रहते हैं। प्रत्येक रस का एक निश्चित स्थायी भाव होता है, पर एक संचारी भाव अनेक रसों के साथ रह सकता है। **[1]**

(ख) रौद्र रस का स्थायी भाव क्रोध है। **[1]**

(ग) वीभत्स रस। **[1]**

(घ) वियोग शृंगार रस का उदाहरण-

कहेउ राम वियोग तब सीता।
मों कहँ सकल भय विपरीता।
नूतन किसलय मनहुँ कृसानु। **[1]**
काल निसा सम निसि, ससि, भानू।। **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016)**

खंड 'ग' पाठ्यपुस्तक तथा पूरक पाठ्यपुस्तक 34

6. **(क)** हालदार साहब चश्मे वाले को देश भक्त इसलिए मान रहे थे क्योंकि वह नेताजी के प्रति सम्मान भाव रखता था और बार-बार उनकी प्रतिमा पर चश्मा लगा देता था। **[2]**

(ख) हालदार साहब को कैप्टन द्वारा मूर्तिकार की कमी को दूर करने का प्रयास करना बड़ा विचित्र लग रहा था। **[2]**

(ग) पानवाले ने चश्मे वाले के विषय में यह बताया कि चश्में वाला लंगड़ा है, और वह पागल है। वह भला कैसे जाएगा फौज़ में। **[2]**

7. **(क)** हर वर्ष गंगा स्नान जाते वक्त उनकी आस्था संत समागम और लोक दर्शन पर होती थी वे तीस कोस पैदल चलकर जाते थे। साधु के रूप में वे न तो कोई सहारा या सामान लेते थे और गृहस्थ के रूप में कभी किसी से भिक्षा नहीं माँगते थे। पाँच दिन तक केवल पानी पीकर ही रहते थे। **[2]**

(ख) नवाब साहब ने खीरों को अच्छी तरह से धोया और पोंछकर तौलिए पर रखा। जेब से चाकू निकाला और उससे दोनों खीरों के सिर काटकर झाग निकाले और बहुत सावधानी से छीलकर फाँकों को तौलिए पर तरीके से सजाया। फिर नवाब साहब ने खीरों की फाँकों पर जीरा मिला नमक-मिर्च बुरक दिया। **[2]**

(ग) फादर कामिल बुल्के का हिंदी भाषा में विशेष रुचि एवं लगाव था। हिंदी के लिए वे समर्पित भाव से तल्लीन रहे। उन्होंने जेबियर्स कॉलेज के हिंदी-संस्कृत विभाग के अध्यक्ष रहते हुए शोधकार्य तथा अध्ययन किया। उन्होंने बाइबिल का हिंदी अनुवाद किया, अंग्रेजी-हिंदी कोश तैयार किया तथा 'ब्लू बर्ड' का अनुवाद 'नील पंछी' नाम से किया। ये हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने हेतु प्रेरित व उद्‌बोधित करते रहे। **[2]**

(घ) मुहर्रम से बिस्मिल्ला खाँ का अत्यधिक जुड़ाव था। मुहर्रम के महीने में खाँ साहब हजरत हमाम हुसैन एवं उनके वंशजों के प्रति पूरे दस दिनों तक शोक मनाते थे।

मुहर्रम की आठवीं तारीख को बिस्मिल्ला खाँ खड़े होकर शहनाई बजाते थे। वे दाल मंडी में फातमान के लगभग आठ किलोमीटर की दूरी तक रोते हुए नौहा बजाते पैदल ही जाते थे। उनकी आँखें इमाम हुसैन और उनके परिवार के लोगों की शहादत में भीगी रहती थीं। उन दिनों में वे न तो शहनाई बजाते थे और न ही किसी संगीत कार्यक्रम में शामिल होते थे। उस समय एक महान संगीतकार का सहज मानवीय रूप देखकर, उनके प्रति अपार श्रद्‌धा उत्पन्न हो जाती थी। **[2]**

(ङ) देश की एकता, अखंडता, स्वतंत्रता आदि के लिए कार्य करने वाले महापुरुषों के प्रति आदर व कृतज्ञता प्रकट करना, देश की धार्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक एकता को बढ़ाने वाले तथा सामाजिक बुराइयों को मिटाने के लिए अपना सारा जीवन लगाने वालों के प्रति श्रद्‌धा प्रकट करना। **[2]**

8. **(क)** कवि ने यश, वैभव, मान आदि को भ्रमित करने वाली मृगतृष्णा के समान बताया है, क्योंकि मनुष्य यश आदि के लिए भ्रमित होता है और कभी संतृप्त नहीं होता है। **[2]**

(ख) मानव जीवन में सुख के बाद दु:ख की काली छाया भी सामने खड़ी रहती है। यहाँ चाँदनी रात मनुष्य के सुख का प्रतीक है तो काली रात दु:ख का प्रतीक है। **[2]**

(ग) मनुष्य को यथार्थ से पलायन न कर यथार्थ का सामना करना चाहिए। जीवन में कठिनाइयाँ आती हैं इनसे विचलित हुए बिना उनका सामना करना चाहिए। **[2]**

(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016)

9. **(क)** ***(i)*** गोपियाँ कृष्ण के प्रेम में ऐसी अनुरक्त हैं जैसे गुड़ में चींटी।

(ii) गोपियाँ अपने आपको हारिल पक्षी के समान कहती हैं जिसने कृष्ण रूपी लकड़ी को मज़बूती से पकड़ रखा है।

(iii) वे मन, कर्म, वचन से कृष्ण को मन में धारण करती हैं।

(iv) दिन-रात, उठते-बैठते, सोते-जागते श्रीकृष्ण का नाम रटती हैं।

(v) योग-संदेश को सुनकर व्याकुल हो जाती हैं। **[2]**

(ख) गोपियाँ तुलसीदास द्वारा रचित 'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' में व्यंग्य का परिपाक पूरी तरह से देखने को मिलता है। लक्ष्मण के कथन से यह स्पष्ट रूप से दिखलाई देता है।

(i) लक्ष्मणजी परशुरामजी से कहते हैं कि शिवजी के धनुष के टूटने से आपको क्या हानि (क्षति) हो जाएगी या अगर यह नहीं टूटता तो क्या लाभ होता?

(ii) लक्ष्मणजी परशुरामजी से व्यंग्य भरी वाणी में कहते हैं कि आप अपने इस कठोर फरसे को बार-बार क्यों दिखा रहे हैं? यहाँ पर छुईमुई का पौधा नहीं है अर्थात हम इतने कमजोर नहीं हैं जो आपकी इस फरसे रूपी तर्जनी उँगली को देखकर मर (डर) जाएँगे। **[2]**

(ग) प्रस्तुत पंक्ति में कवि ने बादल की प्राकृतिक रूप से छा जाने वाली स्थिति का वर्णन किया है कि बादल किसी अनंत अज्ञात स्थल से आकर यकायक आसमान में छा जाते हैं। कवि ने ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि गर्मी से तपती धरती को राहत प्रदान करने के लिए बादल अनजानी दिशा से आकर आकाश में छा गए थे। **[2]**

(घ) कृषक का जीवन कृषि पर आधारित है। वह दिन-रात, समय-असमय दु:ख की चिंता न करते हुए अपने परिश्रम से बीज बोने से लेकर फसल तैयार होने तक का धैर्य रखता है। अत: उसके धैर्य और अथक परिश्रम की पराकाष्ठा को देखकर कृषक को अधिक महत्व दिया गया है। **[2]**

(ङ) संगतकार के माध्यम से कवि ने ऐसे व्यक्तियों की ओर संकेत किया है जो अन्य व्यक्ति के साथ चलते हैं और उनके सहायक होते हैं, किसी भी व्यक्ति की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभातें है जैसे संगीत में गायक के साथ संगतकार महत्वपूर्ण होते हैं उसी प्रकार जीवन में साथ चलते लोग। **[2]**

10. **(क)** भोलानाथ का अपने पिता से अत्यधिक जुड़ाव था, फिर भी विपदा के समय वह पिता के पास न जाकर माँ की शरण लेता है। मेरे अनुसार इसके निम्नलिखित कारण हो सकते हैं-

(अ) बच्चा किसी भी परेशानी में अपनी माँ के साथ रहकर ही सुरक्षित महसूस करता है। परेशानी में उसे पिता का साथ नहीं सुहाता।

(ब) माता के आँचल में उसे दु:खों का पता नहीं चल पाता और वह आराम से रहता है।

(स) माँ प्यार, ममता और वात्सल्य की खान होती है, इसलिए जब बच्चे को कोई भी परेशानी या कष्ट होता है तो वह माँ के पास जाता है पिता के नहीं।

(द) विपदा के समय बच्चे को माँ के लाड़ और उसकी गोद की जरूरत होती है। उसे जितनी कोमलता माँ से मिल सकती है उतनी पिता से नहीं।

(य) बच्चा अपनी माँ से भावनात्मक रूप से अधिक जुड़ाव महसूस करता है क्योंकि माँ बच्चे की भावनाओं को अच्छी तरह से समझती है।

यही कारण है कि बच्चा माँ की गोद में ही सुख, शांति और चैन पाता है। **[3]**

(ख) आज के युग में इतनी उच्छृंखलता बढ़ती जा रही है कि प्रकृति के विरुद्ध खिलवाड़-सा किया जा रहा है। इसे रोकने के लिए निम्नलिखित उपाय किए जा सकते हैं –

(i) आज पॉलिथिन का प्रयोग कम से कम किया जाना चाहिए।

(ii) पहाड़ों पर वृक्षों का कटान कम से कम करें तथा कटान करने वालों को रोका जाना चाहिए।

(iii) पहाड़ों पर वृक्षों का रोपण अधिक से अधिक किया जाना चाहिए तथा वृक्षारोपण के लिए जागरूक किया जाना चाहिए।

(iv) कम से कम वाहनों का प्रयोग हो जिससे प्रदूषण कम फैले।

(v) नदियों आदि में गंदे नाले, अपशिष्ट पदार्थों का बहना बंद किया जाना चाहिए। **[3]**

(ग) जब मूर्तिकार को जार्ज पंचम की नाक के लिए समान पत्थर नहीं मिला तो वह हुक्मरानों की सलाह पर जॉर्ज पंचम की नाक की माप लेकर संपूर्ण देश के दौरे पर निकल पड़ा। अपने इस दौरे में वह पहले दिल्ली से मुम्बई पहुँचा, वहाँ जाकर दादा भाई नौरोजी, गोखले, तिलक, शिवाजी आदि की नाकें टटोलीं। फिर वहाँ से गुजरात गया। वहाँ पहुचकर उसने गांधी, पटेल, महादेव देसाई की नाकों की माप ली। यहाँ से भी निराश होकर वह बंगाल गया और रवींद्रनाथ, सुभाष, राजा राम मोहनराय की नाकें टटोलीं, यहाँ तक कि उसने बिहार जाकर शहीद हुए बच्चों की नाक की भी माप ली, उनकी भी नाक जॉर्ज पंचम की नाक से बड़ी निकली, हताश होकर उसने उत्तर प्रदेश पहुँचकर चन्द्रशेखर आजाद, बिस्मिल, मदनमोहन मालवीय की नाकें भी मापीं मद्रास जाकर सत्यमूर्ति की नाक, व मैसूर, केरल प्रांत का दौरा करता हुआ मूर्तिकार पंजाब जा पहुँचा, वहाँ जाकर उसने लाला लाजपत राय, भगत सिंह की लाटों को टटोला किंतु सभी जगह उसे निराशा का ही सामना करना पड़ा क्योंकि सभी शहीद देशभक्तों की नाक जार्ज पंचम की नाक से बड़ी निकली। इनके अर्थात् देशभक्तों के जीवन मूल्य अनुकरणीय हैं- जो कि इस प्रकार हैं- (1) देश-भक्ति की भावना (2) आत्मनिर्भरता (3) स्वावलंबन (4) गुलामी वाली मानसिकता का त्याग (5) दृढ़निश्चय (6) राष्ट्रहित ही सर्वोपरि आदि। **[3]**

खंड 'घ' लेखन **20**

11. (क) मनोरंजन के साधन

प्रस्तावना- जीवन संघर्षमय है। मानव को अनेक चिंताओं और परेशानियों से गुजरना पड़ता है। इस स्थिति में मनोरंजन ही चिंता-मुक्ति प्रदायक है। मन में खुशी लाने के लिए तथा अपनी कार्यक्षमता बढ़ाने के लिए मनोरंजन आवश्यक है।

मनोरंजन की आवश्यकता और महत्व- जब से मनुष्य ने होश संभाला है तभी से ही उसने मनोरंजन की आवश्यकता अनुभव की है। जब मन जीवन के संघर्षों से ऊब जाता है, तब मनुष्य को ऐसे साधनों की आवश्यकता होती है, जिससे उसकी थकान दूर हो सके और उसमें नई स्फूर्ति का संचार हो सके।

मनोरंजन का उतना ही महत्व है, जितना जीवन के लिए भोजन का महत्व है। जीवन की शुष्कता और नीरसता को दूर करने के लिए मनोरंजन की विशेष आवश्यकता है। जीवन में चहुँमुखी विकास के लिए मनोरंजन परमावश्यक है।

मानव-जीवन में मनोरंजन के साधनों का बदलता स्वरूप- प्राचीनकाल से ही मानव मनोरंजन की आवश्यकता को अनुभव करता आ रहा है। वह निरंतर मनोरंजन के नए-नए साधनों का विकास करता रहा। प्राचीनकाल में मनोरंजन के साधन सीमित थे, परंतु आधुनिक विज्ञान ने मनोरंजन के साधनों का निरंतर विकास किया है। प्राचीनकाल में मनुष्य आखेट, कठपुतली का नाच, पशुओं की लड़ाई, नाटक, नौटंकी आदि

देखकर मनोरंजन करता था, तो आज विज्ञान की देन के फलस्वरूप विभिन्न उच्चकोटि के विकसित साधन सिनेमा और दूरदर्शन, आदि उपलब्ध हैं।

मनोरंजन के साधन- मनोरंजन का प्राचीन तथा आधुनिक साधनों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है:

(अ) नाटक, स्वांग तथा महफिल- प्राचीनकाल से आज तक नाटकों का रूप ज्यों-का-त्यों बना हुआ है। नाटक में कहानी को अभिनय द्वारा वास्तविक रूप दिया जाता है। स्वांग में नृत्य तथा गीतों की प्रधानता होती है।

(ब) खेल-तमाशे- पहले नट लोग अपनी शारीरिक कला का प्रदर्शन करके लोगों का मनोरंजन करते थे। बाजीगर, रीछ और बंदर के तमाशे भी मनोरंजन के साधन थे। नटों का खेल, रास-लीला, विभिन्न प्रकार के खेल तो आज भी प्रचलित हैं।

(स) सिनेमा- सिनेमा मनोरंजन का उत्तम और लोकप्रिय साधन है। इसकी घटनाएँ वास्तविक-सी प्रतीत होती हैं।

(द) सर्कस-सर्कस मनोरंजन का प्राचीन साधन है। इसमें स्त्री-पुरुष ही नहीं अपितु प्रशिक्षित पशु भी अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं।

(य) रेडियो-रेडियो भी मनोरंजन का विज्ञान प्रदत्त उत्तम साधन है। इसमें लोग घर बैठे ही देश-विदेश के समाचार सुन सकते हैं व अन्य मनोरंजन व ज्ञानवर्द्धक कार्यक्रम भी सुन सकते हैं।

(र) टेलीविजन-आधुनिक संसार की 20वीं सदी का यह नवीन आविष्कार मनोरंजन का अति उपयुक्त साधन है। इसके द्वारा कुछ ही सैकिंड में विश्व की हर जानकारी उपलब्ध हो जाती है। ज्ञानवर्द्धक एवं मनोरंजक कार्यक्रम चौबीस घंटे प्रसारित होते रहते हैं। टेलीविजन पर वीडियो गेम्स भी खेले जा सकते हैं।

(ल) खेलकूद-मन को स्वस्थ रखने के लिए खेलकूद भी मनोरंजन का साधन है। आजकल विश्व में क्रिकेट, फुटबॉल, हॉकी, टेनिस, बैडमिंटन के खेल विशेष रूप से प्रचलित हैं। इनसे हमारा मनोरंजन तो होता ही है साथ ही उनसे खेल भावना विकसित होती है और राष्ट्रीय एकता का भी विकास होता है।

भारत में मनोरंजन के साधनों की स्थिति- बढ़ती हुई जनसंख्या ने हमारे देश में मनोरंजन के साधनों को सीमित कर दिया है। जहाँ आज रेडियो, सिनेमा, दूरदर्शन जैसे आधुनिक साधन विकसित हुए हैं, वहीं परंपरागत नाटक, स्वांग, खेलकूद, आदि का प्रचलन निरंतर कम हो रहा है। आवश्यकता इस बात की है कि आधुनिक मनोरंजन के साधनों के मोह में प्राचीन साधनों का त्याग नहीं करना चाहिए। सरकार को भी इस ओर ध्यान देकर मनोरंजन के साधनों को प्रोत्साहित करना चाहिए।

उपसंहार- मनोरंजन के साधनों का उचित प्रयोग किया जाए तो वह ज्ञानर्वद्धक सिद्ध होते हैं। इसमें साहित्यिक पुस्तकों एवं खेलकूद तथा दूरदर्शन की भूमिका जनहित में आज भी जारी है। वहीं इसके विपरीत कुछ लोग मनोरंजन के नाम पर गलत आदतें डाल लेते हैं, वे जुआ, शराब या वेश्यावृति में धन के व्यय को मनोरंजन मानते हैं, जिससे समाज को लाभ के स्थान पर हानि होती है तथा समाज असुरक्षित हो जाता है। **[10]**

(ख) वृक्षारोपण का महत्व

प्रस्तावना-पेड़-पौधे एवं वनस्पति जीवन की आधारशिला हैं। आदिकाल से ही मनुष्य का प्रकृति के साथ घनिष्ठ संबंध चला आ रहा है। मनुष्य प्रकृति की गोद में पला तथा बड़ा हुआ है। प्रकृति ने ही मानव जीवन को संरक्षण एवं शीतल छाया प्रदान की, जंगल एवं हिंसक पशुओं से बचने के लिए मनुष्य ने घने वृक्षों के नीचे झोंपड़ियाँ बनाकर अपने परिवार को गर्मी-सर्दी से बचाया। कहने का तात्पर्य यह है कि मानव प्रकृति के बिना नहीं रह सकता है। वनस्पति ही उसका जीवन है। पेड़ हमारी संस्कृति की आधारशिला है।

वृक्ष और मनुष्य-वृक्षों से हमें भोजन बनाने के लिए ईंधन, फर्नीचर के लिए लकड़ी व कागज़ के लिए लुग्दी की प्राप्ति होती है। वन और वृक्षों के बारे में कहा गया है-

जीव जगत के रक्षक हैं वन, करते दूर प्रदूषण।
धन-संपति स्वास्थ्यदायक हैं ये धरती भूषण।।

ये वृक्ष भूमि कटाव रोकने में और नदियों की बाढ़ से बचाने में हमारी मदद करते हैं। यदि हम शुद्ध पर्यावरण चाहते हैं तो अधिकाधिक वृक्षारोपण करें। प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में कम-से-कम पाँच वृक्ष लगाने चाहिए और उनका संरक्षण भी करना चाहिए। कहा गया है-

वृक्ष धरा के भूषण हैं
करते दूर प्रदूषण हैं

जैसे-जैसे मानव सभ्यता का विकास होता गया, जनसंख्या में वृद्धि होती गई तथा आवश्यकताएँ बढ़ने लगीं, वैसे-वैसे वनों की निर्ममतापूर्वक कटाई होने लगी। जो पहाड़ हरे-भरे वृक्षों से सुशोभित थे, जिन पर्वतों पर नयनाभिराम हरियाली का साम्राज्य था, उनके कट जाने से वे दिगंबर हो गए। उनका सौंदर्य एवं सुंदरता समाप्त हो गई। जलवायु एवं वर्षा में परिवर्तन हो गया। पर्यावरण दूषित हो गया। वृक्षों की निर्मम कटाई से मानव-सभ्यता के अंत का खतरा उपस्थित हो गया। अब हमें पेड़ों की उपयोगिता एवं उनका महत्व प्रतीत होने लगा है।

वृक्षारोपण का महत्व- वन अपार संपदा के स्वामी हैं। कई प्रकार की बहुमूल्य जड़ी-बूटियाँ वनों से प्राप्त होती हैं। पशुओं के लिए चारा तथा मनुष्य के लिए इमारती लकड़ी वनों से मिलती हैं। लाख, गोंद, हर्र, रबर आदि पेड़ों से मिलती हैं। पृथ्वी को हरा-भरा, सुंदर तथा आकर्षक बनाने में वृक्षों का बहुत बड़ा योगदान है। हरियाली के कारण ही उद्यानों और बगीचों का महत्व है। फल और फूल खिलते हैं। वृक्षों की अधिकता से पर्याप्त वर्षा होती है। जलवायु शीतल एवं स्वास्थ्यप्रद होती है।

वनों से लाभ- वृक्षों से तापमान में कमी होती है। पृथ्वी की उपजाऊ शक्ति बढ़ती है। मरुस्थल के विकास को रोकने के लिए वृक्षारोपण की बड़ी आवश्यकता है। भारतीय कृषि वर्षा पर निर्भर है। आकाश में चलती हुई मानसूनी हवाओं को वृक्ष अपनी ओर खींचते हैं। साँस द्वारा छोड़ती हुई विषैली हवा को वृक्ष ग्रहण कर लेते हैं और बदले में हमें स्वच्छ एवं स्वास्थ्यवर्द्धक वायु प्रदान करते हैं। वृक्ष मिट्टी के कटाव को रोकते हैं। हवा को स्वच्छ रखने में सहायता देते हैं।

वृक्षों के विनाश को देखकर मानव-सभ्यता चिंतित है। वृक्षों को लगाने, उनकी वृद्धि करने और संरक्षण की ओर हमारा ध्यान गया है इसलिए वृक्षारोपण और वन महोत्सव के आंदोलन की शुरूआत हुई है। प्रतिवर्ष जुलाई मास में वन-महोत्सव मनाया जाता है। देश के कोने-कोने में करोड़ों पौधे लगाए जाते हैं। उनकी उचित देखभाल का संकल्प लिया जाता है। अतः जनता और सरकार का यह कर्तव्य है कि पेड़-पौधों की संख्या बढ़ाने में योगदान दें। सूने-निर्जन तथा उजाड़ स्थानों पर वृक्ष लगाए जाएँ।

उपसंहार- हम कह सकते हैं कि पेड़-पौधे हमारे लिए बहुत आवश्यक हैं। उनके संरक्षण एवं उनकी वृद्धि में प्रत्येक भारतवासी को अपना सहयोग देना चाहिए। वृक्ष हमारे जीवन हैं एवं उन्नति के प्रतीक हैं। **[10]**

(ग) देश-प्रेम

प्रस्तावना- मनुष्य जिस देश में जन्म लेता है, उसके प्रति उसका प्रेम स्वाभाविक होता है। यदि उसके विकास में वह समुचित सहयोग नहीं करता तो उसका जन्म व्यर्थ है। देश में प्रेम की भावना ही मनुष्य को बलिदान और त्याग की प्रेरणा देती है। मनुष्य जिस भूमि पर जन्म लेता है, जिसका अन्न खाकर, जल पीकर अपना विकास करता है, उसके प्रति प्रेम की भावना का उसके जीवन में सर्वोच्च स्थान होता है। इसी भावना से ओत-प्रोत होकर कहा गया है-

'जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।'

देश-प्रेम का अर्थ- देश-प्रेम का अर्थ केवल वहाँ की मिट्टी से ही प्रेम करना नहीं है अपितु वहाँ के प्रत्येक मानव-पशु-पक्षी, प्रकृति, वहाँ की सभ्यता एवं संस्कृति सभी के प्रति प्रेम करना है। यदि देश के लिए हमें बड़े-से-बड़ा बलिदान करना पड़े वह भी थोड़ा ही है-

''सच्चा प्रेम वही है जिसकी तृप्ति आत्मबलि पर हो निर्भर।
त्याग बिना निष्प्राण प्रेम है करो प्रेम पर प्राण निछावर।''

देश-प्रेम की स्वाभाविकता- प्रत्येक व्यक्ति में देश-प्रेम की भावना स्वाभाविक रूप से निहित रहती है। चाहे उसे अपने देश में कितनी भी कठिनाइयों का सामना करना पड़े, फिर भी वह अपने ही देश में रहना चाहता है। अपने देश का तपता हुआ रेगिस्तान, ऊबड़-खाबड़ रास्ते, विषम पर्वतमालाएँ ही उसके लिए सुख का कारण होती हैं। कहा भी गया है-

''विषुवत रेखा का वासी जो जीता है नित हाँफ-हाँफकर।
रखता है अनुराग अलौकिक फिर भी अपनी मातृभूमि पर।।''

देश-प्रेम का महत्व- देश-प्रेम एक ऐसा पवित्र एवं सात्विक भाव है जो निरंतर त्याग और तपस्या की प्रेरणा देता है। देश प्रेम का संबंध मानव की आत्मा से है, इसीलिए इसमें इतना समर्पण का भाव पाया जाता है। प्रत्येक व्यक्ति की यह अभिलाषा होती है कि उसके देश पर ही उसके प्राण न्योछावर हों।

देश-प्रेम के विविध क्षेत्र- देश सेवा के अनेक क्षेत्र हैं। मात्र सैनिक बनकर और युद्ध में उतरकर ही देश सेवा नहीं होती, अपितु हर क्षेत्र में देश-प्रेम की भावना से काम करके यह पल्लवित पुष्पित होती है। देश प्रेम के लिए काम करने के निम्नलिखित क्षेत्र हो सकते हैं- (अ) राजनीति (ब) समाज सेवा (स) धन (द) कला एवं साहित्य।

देश भक्तों की इच्छा- देशभक्त कभी भी अपने सुख व वैभव की कामना नहीं करते हैं। वे संपूर्ण सुख त्यागकर देश पर प्राण न्योछावर करने के लिए तैयार रहते हैं। उनकी सदैव यही इच्छा रहती है-

''वैभव-विलास मैं नहीं भोगने आया।
हे मातृ-भूमि तुझ पर अर्पित मन-काया।।''

उपसंहार- हर नागरिक का कर्तव्य है कि वह देश के लिए हर प्रकार के त्याग को करने के लिए सदैव तत्पर रहे। आज संपूर्ण विश्व हमारे देश पर आंखें गड़ाए हुए हैं। हमारे देश में भी अब एक सुविधा-भोगी वर्ग उत्पन्न हो गया है जो अपनी सुविधाओं के लिए हर तरह का अपराध कर सकता है। **[10]**

12.

प्रारूप/औपचारिकताएँ	**[1]**
विषय-सामग्री	**[3]**
भाषा	**[1]**
(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016)	**[5]**

व्याख्यात्मक हल

परम श्रद्धेय पिताजी

सादर चरण स्पर्श,

मैं बहुत ही शर्मिंदा होकर यह पत्र लिख रहा हूँ। कृपया मुझे क्षमा करें। मुझसे अनजाने में कल बहुत बड़ी गलती हुई जिसके कारण आपको अत्यंत दु:ख पहुँचा है। आपके दु:ख का कारण बनकर मैं बहुत लज्जित हूँ। मैं आपके सामने भी नहीं आ पा रहा हूँ।

आपसे विनम्र प्रार्थना है कि अनजाने में हुई गलती के लिए कृपया मुझे क्षमादान दें। भविष्य में कभी गलती का मौका नहीं दूँगा।

शेष कुशल है। माताजी को चरण स्पर्श तथा छोटे-भाई बहिनों को हार्दिक प्यार स्वीकार हो।

आपका आज्ञाकारी पुत्र

कमल नाथ

सरस्वती नगर फिरोजाबाद

अथवा

सेवा में,

डिपो मैनेजर

परिवहन निगम, ईदगाह कॉलोनी आगरा

विषय- बस सेवा में प्रभावी सुविधा हेतु।

महोदय,

इस पत्र के माध्यम से आपके संज्ञान में लाना चाहता हूँ कि इस क्षेत्र की बसें अनियमित रूप से चलती हैं, जिससे क्षेत्रीय निवासियों को बहुत असुविधाएँ हो रही हैं। बस ड्राइवर चाहे जब, चाहे जहाँ अपनी मर्जी से बस खड़ी कर देते हैं। आपसे अनुरोध है कि अपने अधीनस्थों को समुचित आदेश निर्देश देकर बस व्यवस्था में सुधार लाने की कृपा करें।

भवदीय

श्याम शंकर,

ग्राम प्रधान,

अकोला, जिला आगरा।

13.

जल ही जीवन है

विश्व जल दिवस, 22 मार्च 20....

जल है जीवन का अनमोल रतन, इसे बचाने का तुम करो जतन।

आयोजन स्थल – बल्केश्वर महादेव मंदिर, बल्केश्वर कॉलोनी, आगरा

फोन नंबर: 056252xxxx

[5]

अथवा

निरमा लाइए स्वच्छ रहिए

सफेद स्वच्छ धुलाई के लिए निरमा वाशिंग पाउडर का इस्तेमाल करें।

न कपड़े की चमक घटे और न हाथ फटे।

हमेशा प्रयोग में लाएँ। उचित दरों पर।

अग्रवाल जनरल स्टोर, रावतपाड़ा, आगरा

मो. 9836351.....

[5]

● ●

हिंदी 'अ'

प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र 11

उत्तरमाला

सी.बी.एस.ई., कक्षा X

खंड 'क' अपठित बोध 10

1. (क) लगभग 500 वर्ष से कुछ धर्म प्रचारकों में यह कहा जाता रहा है कि किसी भी बालक को हमें छह-सात साल की उमर तक के लिए दे दीजिए। वह बड़ा होने के बाद जीवन भर हमारा ही बना रहेगा। **[2]**

(ख) पहले छह-सात साल में जीवन मूल्य सिखाकर किसी भी व्यक्ति के जीवन का ढर्रा तय किया जा सकता है। चाहे उसकी इच्छाएँ, कामनाएँ कुछ भी हों, वह उसे भूल नहीं सकता। **[2]**

(ग) हमारे अवचेतन मन से हमें आजादी मिल सकती है तथा इस तरह की आजादी की अनुभूति हर किसी को कभी न कभी अवश्य होती है। **[2]**

(घ) चेतन अवस्था में लिए गए निर्णय और हुए अनुभव किसी भी व्याक्ति की मनोकामनाओं और महत्वाकांक्षाओं के अनुरूप होते है तथा मन अपने अवचेतन के प्रतिबंधक ढर्रों पर बार-बार नहीं लौटता है। **[2]**

(ङ) जो लोग रचनात्मक ढंग से सोचने की अवस्था में होते हैं और आनंद में रहते है, उनका चेतन मन 90 प्रतिशत सजग रहता है। **[1]**

(च) हमें नकारात्मक प्रतिबंधक ढर्रों से बचने के लिए मन के अवचेतन भाग को चेतन भाग से नए भाव व सकारात्मक आदतें सीखने के लिए प्रेरित करना चाहिए। **[2]**

खंड 'ख' व्यावहारिक व्याकरण 15

2. (क) मिश्र वाक्य **[1]**

(ख) आजकल हम लोग मिट्टी के जो गोले बनाते हैं, उन्हें सुखा देते हैं। **[1]**

(ग) स्थानीय कलाकार की मजबूरी थी इसलिए उसने नेताजी की मूर्ति बनाने का काम किया। **[1]**

(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2015)

(घ) जो सख्त मिज़ाज बुआ है मैं उसके घर नहीं जाऊँगी। **[1]**

3. (क) यह मकान दादाजी द्वारा बनवाया गया है। **[1]**

(ख) उससे दौड़ा नहीं जाता। **[1]**

(ग) अध्यापक ने विद्यार्थी को पढ़ाया। **[1]**

(घ) राष्ट्रपति द्वारा इस भवन का उद्घाटन किया गया। **[1]**

(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2016)

4. **(क)** किसी को- पुरुषवाचक सर्वनाम, एकवचन, स्त्रीलिंग/पुल्लिंग, कर्ता कारक। [½ + ½ = 1]
(ख) अपने- सार्वनामिक विशेषण, 'देश' विशेष्य का विशेषण, एकवचन, पुल्लिंग [½ + ½ = 1]
(ग) प्रेम- भाववाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिंग [½ + ½ = 1]
(घ) होगा- अकर्मक क्रिया, भविष्य काल, कर्तृवाच्य, एकवचन, पुल्लिंग [½ + ½ = 1]
(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2015)

5. **(क)** वात्सल्य रस [1]
(ख) बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकायें
सौंह करे भौंहन हँसे, देन कहे नटी जाए। [1]
(ग) शोक [1]
(घ) वीभत्स रस [1]

खंड 'ग' पाठ्यपुस्तक तथा पूरक पाठ्यपुस्तक 34

6. **(क)** फादर से बात करने पर कर्त्तव्य-बोध एवं सुकर्म करने की प्रेरणा अनुभूति होती थी। तथा व्यक्ति कर्म करने के संकल्प से भर जाता था। [2]
(ख) करुणा के निर्मल जल में स्नान करने का आशय यह है कि फादर की करुणा के स्पर्श से मन अच्छाइयों की ओर प्रेरित होता है। [2]
(ग) उत्सव और संस्कार में फादर बड़े भाई और पुरोहित की भूमिका निभाते थे। तथा वे हमारे साथ खड़े हो कर हमें आशीषों से भर देते थे। [2]

7. **(क)** • सच्चे सुर की नेमत। क्योंकि सच्चे कलाकार थे, हमेशा सीखते रहते थे, पूर्णता पाने की ललक/ इच्छा रहती थी विनम्रता, ईश्वर पर आस्था, संगीत के सच्चे साधक थे। **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2015)** [½ + ½ + 1= 2]

व्याख्यात्मक हल-बिस्मिल्ला खाँ की संगीत साधना अर्थोपार्जन का जरिया नहीं थी। वे ईश्वर से प्रार्थना करते समय कभी भी धन-संपत्ति की चाह प्रकट नहीं करते थे। वे सदैव ईश्वर से सच्चे सुर का वरदान माँगते थे।

(ख) • खानपान में बदलाव।
• पुरानी परंपराओं का लुप्त होना।
• सांप्रदायिक सद्भाव में कमी।
• संगीतकारों के प्रति सम्मान में कमी।
• रियाज़ में कमी।
(किन्हीं दो बिंदुओं का उल्लेख अपेक्षित) **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2015)** [1 + 1 = 2]

व्याख्यात्मक हल-बिस्मिल्ला खाँ काशी में होने वाले निम्नलिखित परिवर्तनों के कारण व्यथित होते रहते थे-
(i) वहाँ हो रहे खानपान के बदलाव से।
(ii) पुरानी परंपराओं के धीरे-धीरे लुप्त होने से।
(iii) काशी में पहले सभी सद्भाव और प्रेम से रहते थे किंतु समय के साथ उनके सांप्रदायिक स्वभाव में कमी आने लगी।
(iv) काशी में पहले की अपेक्षा संगीतकारों को कम महत्व दिया जाने लगा जिससे रियाज़ में कमी आने लगी।

(ग) नेताजी की आँखों पर काँच का असली चश्मा लगा था। प्रतिमा पर पत्थर का चश्मा न लगा होने के संभावित कारण इस प्रकार होंगे-नगरपालिका को देश के मूर्तिकारों की जानकारी न होना, अच्छी मूर्ति की लागत अनुमान बजट का अभाव, शासनावधि की समाप्ति, स्थानीय स्कूल मास्टर को ही काम सौंपा जाना जिसने महीने भर में मूर्ति बनाने का विश्वास दिलाया होगा। शीघ्रता में उसी पत्थर का चश्मा न बन पाया होगा। **[2]**

(घ) शीला अग्रवाल जैसी प्राध्यापिका किसी भी विद्यार्थी के जीवन को इस प्रकार सँवार सकती हैं- विद्यार्थी का सही मार्गदर्शन करके तथा उसकी सोच-समझ का दायरा बढ़ाकर, उसकी रुचियों को विकास करने का अवसर देकर, उनकी गतिविधियों पर ध्यान देकर तथा उनके सामने स्वयं को आदर्श के रूप में प्रस्तुत करके, क्योंकि बचपन व किशोरावस्था में बच्चों में समझदारी नहीं होती इसलिए उन्हें सही मार्गदर्शन देने की आवश्यकता होती है। **[2]**

(ङ) फ़ादर ने भारत आकर धर्माचार की पढ़ाई की और कोलकाता से बी.ए. तथा इलाहाबाद से एम.ए. की उपाधि प्राप्त की। साथ ही प्रयाग विश्वविद्यालय से 'रामकथा: उत्पत्ति और विकास' विषय पर शोध प्रबंध तैयार किया। वे हिंदी और संस्कृत के विभागाध्यक्ष रहें। उन्हें हिंदी से विशेष लगाव था, वे हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप मे देखना चाहते थे। **[2]**

8. (क) आपके शील स्वभाव को कौन नहीं जानता। आप अपने माता-पिता के ऋण से तो भली भाँति मुक्त हो गए हैं। अब गुरु-ऋण रह गया है, जो हृदय को दु:ख दे रहा है। **[2]**

(ख) परशुराम के गुरु शिव के ऋण की बात।
वे किसी हिसाब-किताब करने वाले को बुला लें, तो लक्ष्मण अपनी थैली खोलकर उनका ऋण चुका देंगे। **[1 + 1= 2]**

(ग) परशुराम पर व्यंग्य कर रहे हैं कि किस प्रकार वे माता-पिता के ऋण से मुक्त हुए। **[2]**
क्योंकि परशुराम ने अपनी माता का गला काटा था। **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2015)**

9. (क) वस्त्र और आभूषण का मोह उसे कमजोर बनाएगा और संसार उसकी आड़ में उसका शोषण कर सकता है। **(सी.बी.एस.ई. अंक योजना, 2015) [2]**

व्याख्यात्मक हल-स्त्री के जीवन में वस्त्र और आभूषण भ्रमों की तरह है अर्थात ये चीज़ें उसके मन को भरमाती हैं। ये स्त्री जीवन के लिए बंधन का काम करते हैं। अत: इस बंधन में नहीं बंधना चाहिए। वस्तुत: समाज वस्त्र, आभूषण आदि की बेड़ियों में जकड़कर स्त्री के अस्तित्व को सीमाओं में बाँध देता है।

(ख) जब बादल अपने हृदय में बिजली की चमक लेकर आते हैं और वर्षा करते हैं तो धरती पर रहने वाला हर प्राणी स्वयं को प्रसन्न और सुखी महसूस करता है। इसीलिए कवि ने बादलों को मानव मन को सुख से भर देने वाला कहा है। **[2]**

(ग) वीर योद्धा कभी भी धैर्य को नहीं छोड़ता, वह युद्धभूमि में वीरता का प्रदर्शन शत्रु से युद्ध करके करता है, वीर योद्धा रणभूमि में शत्रु का वध करता है, कायरों की भाँति अपने प्रताप का केवल बखान नहीं करता। **[2]**

(घ) फसल नदियों के पानी, प्रकाश, हवा, धूप तथा मिट्टी के तत्वों का परिणाम है, किंतु मनुष्य के परिश्रम के परिणामस्वरूप फलती-फूलती है। मनुष्य के हाथों के परिश्रम के बिना अपना रूप ग्रहण नहीं कर पाती। मनुष्य के परिश्रम का विशेष महत्व होने के कारण इसे हाथों के स्पर्श की गरिमा और महिमा कहा है। **[2]**

(ङ) 'जीवन में हैं सुरंग सुधियाँ सुहावनी' से कवि का अभिप्राय उन मधुर स्मृतियों से है जो याद आने पर हमें पीड़ा देती हैं। कवि ऐसी यादों से बचने का प्रयास करने के लिए कह रहा है। ऐसी सुखद यादें प्राय: प्रेम से संबंधित होती हैं जो हमें पीड़ा पहुँचाती हैं इसलिए उन यादों मे न खो जाने की सलाह कवि दे रहा है। **[2]**

10. (क) आज की पत्रकारिता में चर्चित हस्तियों के पहनावे और खान-पान संबंधी आदतों आदि के वर्णन का दौर चल पड़ा है। इस तरह की पत्रकारिता से आम जनता तथा युवा पीढी प्रभावित होने लगती है। यदि ख्याति प्राप्त व्यक्ति का चरित्र अच्छा है तब तो ये अच्छी बात है अन्यथा इससे समाज का संतुलन बिगड़ने और आदर्शों को नुकसान पहुँचने का डर रहता है। इस तरह की पत्रकारिता युवा पीढ़ी को भ्रमित एवं कुंठित

करती है। युवा पीढ़ी देश की रीढ़ है, उसके कमजोर होने से देश कमजोर हो जाएगा। युवा पीढ़ी पत्र-पत्रिकाओं को पढ़कर, चर्चित हस्तियों से प्रभावित होकर उनके खान-पान एवं पहनावे को अपनाने को प्रेरित हो जाती है। अपनी इन इच्छाओं की पूर्ति के लिए उचित-अनुचित मार्ग अपनाने में भी संकोच नहीं करती। इससे दिखावा, बनावटीपन और हिंसा आदि बढ़ती है, क्योंकि कभी-कभी पत्रकारिता दबंग और अपराधी छवि वाले व्यक्तियों को नायक की तरह प्रस्तुत करती है। **[3]**

(ख) 'माता का आँचल' पाठ में विवाह की तैयारियों का बहुत ही-सुंदर वर्णन है। लड़कों की मंडली बारात का भी जुलुस निकालती थी। कनस्तर का तंबूरा बनाकर बजाते, अमोले को घिसते जो शहनाई का काम करती और बड़े मजे के साथ बजाई जाती, टूटी हुई चूहेदानी से पालकी बनाई जाती थी और बच्चे समधी बनकर बकरे पर चढ़ जाते थे और बरात चबूतरे के एक कोने से चलकर दूसरे कोने में जाकर दरवाजे लगती थी। वहाँ काठ की पटरियों से घिरे, गोबर से लिपे, आम और केले की टहनियों से सजाए हुए छोटे आँगन में कुल्हड़ का कलसा रखा रहता था। वहीं पहुँचकर बारात फिर लौट आती थी। लौटते समय खटोली पर लाल पर्दा डालकर, उसमें दुल्हन को चढ़ा लिया जाता था। बाबूजी दुल्हन का मुँह देखते तो सब बच्चे हँस दिया करते थे। **[3]**

(ग) लेखिका ने प्रस्तुत उक्ति को उन स्त्रियों को देखकर कहा है जो पहाड़ों के भारी-भरकम पत्थरों को तोड़कर रास्ता बनाने का श्रमसाध्य कार्य करने में लगी रहती हैं, उन्हें बहुत कम पैसा मिलता है, पर वे देश व समाज को बहुत अधिक लौटा देती हैं। देश की आम जनता भी देश की प्रगति में भरपूर योगदान करती है और उसे उतना नहीं मिल पाता जितने की वह हकदार होती है। देश के श्रमिक एवं किसान देश की प्रगति के लिए कष्टसाध्य कार्यों में लगे रहते हैं। यदि वे कार्य न करें तो देश प्रगति की राह पर आगे नहीं बढ़ सकता, उसके अलावा अन्य लोग भी देश के हित में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यदि वे देश के हित में योगदान न दें तो देश प्रगति की राह पर नहीं बढ़ सकता। **[3]**

खंड 'घ' लेखन 20

11. (क) इंटरनेट

प्रस्तावना- आधुनिक युग सूचना प्रौद्योगिकी का युग है। आज का विश्व विज्ञान के दृढ़ स्तंभ पर टिका है। विज्ञान ने मनुष्य को अनेक शक्तियाँ, सुख-सुविधाएँ तथा क्रांतिकारी उपकरण दिए हैं। जिनमें इंटरनेट एक अत्यधिक महत्वपूर्ण, बलशाली एवं गतिशील सूचना का माध्यम है। नेट के नाम से लोकप्रिय इंटरनेट अपने उपभोक्ताओं के लिए बहुआयामी साधन प्रणाली है। यह दूर बैठे उपभोक्ताओं के मध्य अंतर संवाद का माध्यम है, सूचना या जानकारी में भागीदारी और सामूहिक रूप से काम करने का तरीका है, सूचना को विश्व-स्तर पर प्रकाशित करने का जरिया है और सूचनाओं का अपार सागर है। इसके माध्यम से इधर-उधर फैली तमाम सूचनाएँ प्रसंस्करण के बाद ज्ञान में परिवर्तित हो रही हैं। इसने विश्व-नागरिकों के बहुत ही सुघड़ और घनिष्ठ समुदाय का विकास किया है। इंटरनेट विभिन्न टेक्नोलॉजियों के संयुक्त रूप से कार्य का उपयुक्त उदाहरण है। कंप्यूटरों के बड़े पैमाने पर उत्पादन, कंप्यूटर संपर्क-जाल का विकास, दूर-संचार सेवाओं की बढ़ती उपलब्धता और घटता खर्च तथा आँकड़ों के भंडारण और संप्रेषण में आई नवीनता ने नेट के कल्पनातीत विकास और उपयोगिता की बहुमुखी प्रगति प्रदान की है।

इतिहास और विकास- इंटरनेट का इतिहास पेचीदा है। इसका पहला दृष्टांत सन 1962 में मैसाचुसेट्स टेक्नोलॉजी संस्थान के जे. सी. आर. लिकप्लाइडर द्वारा लिखे गऐ कई ज्ञापनों के रूप में सामने आया था। उन्होंने कंप्यूटर की ऐसी विश्वव्यापी अंतर्संबंधित शृंखला की कल्पना की थी जिसके जरिये वर्तमान इंटरनेट की तरह ही आँकडों और कार्यक्रमों को तत्काल प्राप्त किया जा सकता था।

इंटरनेट के इतिहास में 1973 का वर्ष ऐसा था जिसने अनेक मील के पत्थर जोड़े और इस प्रकार अधिक विश्वसनीय और स्वतंत्र नेटवर्क की शुरूआत हुई। इसी वर्ष में इंटरनेट ऐक्टिविटीज बोर्ड की स्थापना की गई।

इस वर्ष के नवंबर महीने में डोमेन नेमिंग सर्विस (डीएनएस) का पहला विवरण जारी किया गया और वर्ष की आखिरी महत्वपूर्ण घटना इंटरनेट का सेना और आम लोगों के लिए उपयोग के वर्गीकरण द्वारा सार्वजनिक नेटवर्क के उदय के रूप में सामने आया तथा इसी के साथ आज प्रचलित इंटरनेट ने जन्म लिया। इंटरनेट का बाद का इतिहास मुख्यत: बहुविध उपयोग का है, जो नेटवर्क की आधारभूत संरचना से ही संभव हो सका। बहुविध उपयोग की दिशा में पहला कदम फाइल ट्रांसफर प्रणाली का विकास था। इससे दूर-दराज़ के कंप्यूटरों के बीच फाइलों का आदान-प्रदान संभव हो सका। सन् 1984 में इंटरनेट से जुड़े कंप्यूटरों की संख्या 1000 थी जो सन 1989 में एक लाख के ऊपर पहुँच चुकी थी। सन 1990 में ही टिम बर्नर-ली ने वर्ल्ड वाइड वेब (WWW) का आविष्कार करके सूचना प्रस्तुति का एक नया तरीका सामने रखा, जो सरलता से इस्तेमाल योग्य सिद्ध हुआ।

सन 1993 में ग्रैफिकल वेब ब्राउजर का आविष्कार इंटरनेट के क्षेत्र में एक बड़ी घटना थी। इससे न केवल विवरण वरन चित्रों का भी दिग्दर्शन संभव हो गया। इस वेब ब्राउजर को मोजाइक कहा गया। इस समय तक इंटरनेट उपभोक्ताओं की संख्या 20 लाख से अधिक हो गई थी और प्रचलित इंटरनेट आकार ले चुका था।

इंटरनेट संपर्क- इंटरनेट का आधार राष्ट्रीय या क्षेत्रीय सूचना इन्फ्रास्ट्रक्चर होता है जो सामान्यत: हाइबैंड विड्थ ट्रंक लाइनों से बना होता है और जहाँ से विभिन्न संपर्क लाइनें कंप्यूटरों को जोड़ती हैं जिन्हें आश्रयदाता (होस्ट) कंप्यूटर कहते हैं। ये आश्रयदाता कंप्यूटर प्राय: बड़े संस्थानों जैसे-विश्वविद्यालयों, बड़े उद्यमों और इंटरनेट कंपनियों से जुड़े होते हैं और इन्हें इंटरनेट सर्विस प्रोवाइडर (आईएसपी) कहा जाता है। आश्रयदाता कंप्यूटर चौबीसों घंटे काम करते हैं और अपने उपभोक्ताओं को सेवा प्रदान करते हैं। ये कंप्यूटर विशेष संचार लाइनों के जरिए इंटरनेट से जुड़े रहते हैं। इनके उपभोक्ताओं/व्यक्तियों के पीसी (पर्सनल कम्प्यूटर) साधारण टेलीफोन लाइन और मोडेम के जरिए इंटरनेट से जुड़े रहते हैं।

इंटरनेट सेवाएँ- इंटरनेट की उपयोगिता उपभोक्ता को उपलब्ध सेवाओं से निर्धारित होती है। इसके उपभोक्ता को निम्नलिखित सेवाएँ उपलब्ध हैं- जो इस प्रकार हैं-

(*i*) ई-मेल (*ii*) टेलनेट (*iii*) चैट (*iv*) वर्ल्ड वाइड वेब (*v*) ई-कामर्स, इन मुख्य सेवाओं के अतिरिक्त इंटरनेट द्वारा और भी अनेक सेवाएँ प्रदान की जाती है, जिनके असीमित उपयोग हैं।

भारत में इंटरनेट- भारत में इंटरनेट का आरंभ आठवें दशक के अंतिम वर्षो में अर्नेट (शिक्षा और अनुसंधान नेटवर्क के रूप में हुआ था। इसके लिए भारत सरकार के इलेक्ट्रॉनिक विभाग और संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम ने आर्थिक सहायता उपलब्ध कराई थी। इस परियोजना में पाँच प्रमुख संस्थान, पाँचों भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान और इलेक्ट्रॉनिक निदेशालय सम्मिलित थे। अर्नेट का आज व्यापक प्रसार हो चुका है और वह शिक्षा और शोध समुदाय को देशव्यापी सेवा दे रहा है। एक अन्य प्रमुख नेटवर्क नेशनल इन्फॉर्मैटिक्स सेंटर (एनआईसी) के रूप में सामने आया, जिसने प्राय: सभी जनपद मुख्यालयों को राष्ट्रीय नेटवर्क से जोड़ दिया। आज देश के विभिन्न भागों में यह 1400 से भी अधिक स्थलों को अपने नेटवर्क के जरिए जोड़े हुए है।

आम आदमी के लिए भारत में इंटरनेट का आगमन 15 अगस्त 1995 को हो गया था, जब विदेश संचार निगम लिमिटेड ने देश में अपनी सेवाओं का आरंभ किया। प्रारंभ के कुछ वर्षों तक इंटरनेट की पहुँच काफी धीमी रही, लेकिन हाल के वर्षों में इसके उपभोक्ताओं की संख्या में जबरदस्त वृद्धि हुई है। सन 1999 में टेलीकॉम कंपनियों के लिए खोल दिए जाने के परिणामस्वरूप अनेक नए सेवा प्रदाता बेहद प्रतिस्पर्धी विकल्पों के साथ सामने आए।

भविष्य की दिशाएँ- भविष्य के प्रति इंटरनेट बहुत ही आश्वस्तकारी दिखाई दे रहा है और आज के आधार पर कहीं अधिक प्रगतिशाली सेवाएँ प्रदान करने वाला होगा। भविष्य के नेटवर्क जिन उपकरणों और साधनों को जोड़ेंगे, वे मात्र कंप्यूटर नहीं होगी वरन् माइक्रोचिप से संचालित होने के कारण तकनीकी अर्थो में कंप्यूटर जैसे होंगे।

उपसंहार- टेक्नोलॉजियों के लोकप्रिय होते ही सामान्य शिक्षित नागरिकों के लिए भी यह पूरी तरह आसान हो जाएगा कि वह कानून-निर्माण की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी कर सकें। इसके फलस्वरूप कहीं अधिक समर्थ लोकतंत्र संभव हो सकेगा। **[10]**

(ख) नशाखोरी: एक अभिशाप

प्रस्तावना- 'नशाखोरी' युवावर्ग में पनपने वाली एक ऐसी बुराई है जो ग्राम स्तर से लेकर महानगरों तक फैली हुई है। आज का युवा जब समस्याओं से छुटकारा नहीं पाता, तो हताश होकर नशाखोरी करने लगता है। नशाखोरी एक सामाजिक अभिशाप है। अत: इसे दूर करने के लिए सामाजिक स्तर पर प्रयास किए जाने चाहिए।

नशाखोरी का अर्थ- मादक पदार्थों के नियमित सेवन को नशाखोरी कहा जाता है। जब कोई व्यक्ति किसी मादक पदार्थ का प्रतिदिन नियमित सेवन करता है तो वह उसका आदी हो जाता है तथा उस नशे के अभाव में उसका मानसिक, शारीरिक संतुलन भी डगमगा जाता है।

नशाखोरी के दुष्परिणाम- नशाखोरी जैसे सामाजिक अभिशाप से जहाँ समाज में अनेक प्रकार की बुराइयाँ जन्म लेती हैं, वहीं अपराध बढ़ते हैं तथा सामाजिक व्यवस्था चरमराने लगती है, अत: कल्याणकारी राज्य में सरकार का यह दायित्व बनता है कि वह नशाखोरी की प्रवृत्ति पर अंकुश लगाए। भारत में कई राज्यों में पूर्ण नशाबंदी प्रचलित है, किंतु अनेक राज्य अपने यहाँ नशाबंदी लागू नहीं कर पा रहे हैं, क्योंकि यह उनके राजस्व का प्रमुख स्रोत है। प्रतिवर्ष अरबों रुपए सरकार को शराब की दुकानों के ठेके उठाने से प्राप्त होता है। इस आय के मोह को जब तक नहीं छोड़ा जाएगा तब तक नशाबंदी संभव नहीं हैं। नशा करने से व्यक्ति का विवेक कुंठित हो जाता है और उसका स्वयं पर नियंत्रण नहीं रहता, परिणामत: वह समाज-विरोधी एवं अनैतिक कार्य करने में संकोच नहीं करता। नशा करने वाले वे लोग जो निम्न एवं मध्यम आय वर्ग के हैं, अपनी आय का एक बहुत बड़ा भाग 'नशे' पर व्यय कर देते हैं, परिणामत: उनकी आर्थिक स्थिति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है, परिवारीजनों में कलह रहती है और सारा परिवार इसके दुष्परिणाम झेलता हुआ तनावग्रस्त रहता है।

मादक द्रव्यों के प्रकार- मादक द्रव्य अनेक प्रकार के होते हैं, यथा शराब, भांग, गांजा, चरस, अफीम, ताड़ी, कोकीन, मेथाडीन, पेथाडीन, केनेबी पौधे का रस, कोको पत्ती, मोर्फीन, हेरोइन, स्मैक आदि। इनमें से सर्वाधिक प्रचलन शराब का है। शराब भी दो प्रकार की होती है-देशी शराब और विदेशी शराब। देशी शराब का सेवन मजदूर एवं निम्न आर्थिक स्तर वाले लोग करते हैं, क्योंकि यह कम दामों में उपलब्ध हो जाती है, जबकि विदेशी मदिरा का सेवन अपेक्षाकृत अधिक आय वाले मध्य वर्ग एवं उच्च वर्ग के लोग करते हैं।

युवा वर्ग में नशाखोरी- युवा वर्ग में नशाखोरी का प्रचलन पिछले कुछ दशकों में बहुत बढ़ा है। विशेष रूप से स्कूल-कॉलेजों एवं विश्वविद्यालयों के छात्र-छात्राएँ स्मैक, कोकीन, अफीम एवं हेरोइन का नशा करते हैं। यह नशा इंजेक्शन से भी लिया जाता है और मुख से भी। इस नशे की लत से छुटकारा पाना बड़ा कठिन है।

नशाखोरी का कारण- मादक द्रव्यों का सेवन करने के प्रमुख कारण हैं-

(*i*) घर एवं परिवार में उचित स्नेह न मिलना, (*ii*) अवसाद, कुंठा की अधिकता, (*iii*) बेरोजगारी, असुरक्षा की भावना, (*iv*) अनिश्चित भविष्य, (*v*) नैतिक आचरण में गिरावट, (*vi*) आधुनिक बनने की इच्छा, (*vii*) नशेबाजी के चंगुल में फँसना, (*viii*) सिनेमा, दूरदर्शन, विदेशी चैनलों एवं इंटरनेट के अश्लील चैनलों का प्रभाव।

नशाबंदी के उपाय- सरकार को नशाबंदी कानून कड़ाई से लागू करना चाहिए। इससे होने वाले राजस्व की हानि की भरपाई की चिंता न करके पूरे देश में नशाबंदी लागू कर देनी चाहिए तथा मादक पदार्थों के व्यवसाय में लिप्त व्यक्ति को कड़ा दंड देने का प्रावधान करना चाहिए। सामाजिक संस्थानों, अभिभावकों, शिक्षकों, धर्मगुरुओं की भी नशाखोरी रोकने में प्रभावी भूमिका हो सकती है। **[10]**

(ग) वर्तमान भारतीय नारी की चुनौतियाँ

पुरुष-प्रधान समाज में नारी का संघर्ष- जिस समाज में हम जी रहे हैं, वह पुरुष-प्रधान है। यहाँ नारी कहने को देवी अवश्य है किंतु व्यवहार में उसका स्थान पुरुषों से कम है। इसलिए उसकी उन्नति में पग-पग पर बाधाएँ हैं। पुरुष-समाज नारी को आगे नहीं बढ़ने देना चाहता। वह नारी पर अपना दबदबा कायम रखना चाहता है। इसलिए पुरुष नारी के जन्म को रोकता है। अगर वह पैदा हो जाए तो उसे शिक्षा से वंचित रखना चाहता है। वह शिक्षा पा ले तो उसे नौकरी में नहीं आने देना चाहता। वह नौकरी में आ जाए तो उससे घर के सारे काम करवाना चाहता है, ताकि वह दोहरे बोझ के नीचे पिसते-पिसते स्वयं ही हाथ खड़े कर दे। सचमुच पुरुष-प्रधान समाज में नारी का संघर्ष बहुत भीषण है।

घर-परिवार की सीमाओं से बाहर नई चुनौतियाँ-नारी जब से घर-परिवार की सीमाओं को लाँघकर बाहर निकली है, उसके सामने चुनौतियाँ भी बढ़ी हैं। उसे पुरुषों के समाज में पग-पग पर पुरुषों से ही खतरे झेलने पड़ते हैं। पुरुष हमेशा नारी को अकेला देखकर उस पर अपना नियंत्रण करना चाहता है। बॉस के रूप में, सहकर्मी के रूप में, मातहत के रूप में, राह चलते यात्री के रूप में, आवारगर्द बदमाश के रूप में अर्थात हर रूप में वह नारी को परेशान करता है। नारी को नुकीले दाँतों के बीच रहने वाली कोमल जीभ की तरह रहना पड़ता है। फिर भी पुरुषों से मुकाबला करना पड़ता है और विजय भी प्राप्त करनी होती है।

विविध क्षेत्रों में नारी का योगदान-भारत की वर्तमान नारी विकास के ऊँचे शिखर छू चुकी है। उसने शिक्षा के क्षेत्र में पुरुषों से बाजी मार ली है। कंप्यूटर के क्षेत्र में उसकी भूमिका महत्वपूर्ण है। नारी-सुलभ क्षेत्रों में उसका कोई मुकाबला नहीं है। चिकित्सा, शिक्षा और सेवा के क्षेत्र में उसका योगदान अभूतपूर्व है। आज अनेक नारियाँ इंजीनियरिंग, वाणिज्य और तकनीकी जैसे क्षेत्रों में भी सफलता प्राप्त कर रही हैं। पुलिस, विमान-चालन जैसे पुरुषोचित क्षेत्र भी अब उससे अछूते नहीं रहे हैं।

उपसंहार-वास्तव में आज नारी की भूमिका दोहरी हो गई है उसे घर और बाहर दो-दो मोर्चों पर काम सँभालना पड़ रहा है। घर की सारी जिम्मेदारियाँ और ऑफिस का कार्य-इन दोनों में वह जबरदस्त संतुलन बनाए हुए है। उसे पग-पग पर पुरुष-समाज की ईर्ष्या, घृणा, हिंसा और वासना से भी लड़ना पड़ता है। उसकी अदम्य शक्ति ने उसे इतना महान बना दिया है। **[10]**

12. सेवा में,

श्रीमान प्रधानाचार्य,

केंद्रीय विद्यालय नं. 2

आगरा कैंट, आगरा।

विषय- कृतज्ञता ज्ञापन

महोदय,

अति विनम्रतापूर्वक सभी छात्रों की ओर से मैं आपको तथा आपके कुशल निर्देशन में शिक्षण कार्य में कर्मठता एवं परिश्रमपूर्वक जुटे सभी अध्यापकों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ, क्योंकि विद्यालय में दसवीं कक्षा की परीक्षा से पूर्व विभिन्न विषयों के अध्यापन की अच्छी व्यवस्था के कारण हम लोगों की कठिनाईयाँ दूर हो गई हैं। आप गुरुजनों के मार्गदर्शन में सभी छात्र परीक्षा की तैयारी भली-भाँति कर पाए हैं।

सादर

आपका आज्ञाकारी शिष्य

अनुज कुमार

प्रतिनिधि, छात्र संगठन

केंद्रीय विद्यालय नं. 2, आगरा

दिनांक- 30 मार्च 20..... **[5]**

अथवा

1/24 आदर्श नगर

बल्केश्वर, आगरा

प्रिय मित्र महेश

सस्नेह नमस्कार।

बहुत दिनों से तुम्हारा कोई पत्र नहीं मिला। आशा है तुम सपरिवार सकुशल होंगे। आप जानते ही हैं कि आजकल विभिन्न प्रकार के प्रदूषणों के कारण स्वच्छ हवा, पानी नहीं मिल पा रहे हैं। ऊपर से जगह-जगह हर मौके पर लोग पटाखे जलाते हैं, जिनसे वायु प्रदूषण फैलता है जिसके कारण साँस लेना दूभर हो जाता है।

अत: मित्र! हम सबको मिलकर ऐसे कार्य करने चाहिए जिससे लोग पटाखों का प्रयोग न करें ताकि प्रदूषण से बचा जा सके। आशा है आप भी जागरूकता अभियान चलाएँगे। **[5]**

आपका अभिन्न मित्र

अतुल

13.

क्या आप रसोई गैस की किल्लत से परेशान हैं?
हाँ भाई हाँ, तो आज ही खरीदें-
कृष्णा इंडक्शन चूल्हा
अब गैस की आधी कीमत से भी कम खर्चा।
30-35 प्रतिशत तक बिजली बचाएँ।
कीमत-₹1599
संपर्क करें- 0562252562..... **[5]**

अथवा

लंबे चिकने मुलायम बालों के लिए
आँवला केश तेल
आयुर्वेदिक तेल, केप्सूल एवं शैंपू
सभी मेडिकल स्टोर पर उपलब्ध
बालों को लंबा, घना व मुलायम बनाए।
बालों को काला करे। झड़ने से बचाए।
बालों को असमय सफेद होने से रोके।
अधिक जानकारी के लिए फोन- 011 49959..... **[5]**

● ●